

वर्ष : 2023-24
अंक- प्रथम

धरा गुर्जरी



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय, महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) अहमदाबाद
कार्यालय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II) गुजरात

भद्र किला

भद्र किला 1411 ईस्वी में शहर के संस्थापक अहमद शाह द्वारा बनाया गया था। किले का नाम पास ही स्थित भद्रकाली मंदिर से लिया गया था। सदियों पहले इस किले को आर्क किला भी कहा जाता था। अंग्रेजों ने 1817 में किले पर कब्जा कर लिया और इसे स्वतंत्रता तक जेल के रूप में इस्तेमाल किया। 2014 में इसका विधिवत नवीनीकरण किया गया था ताकि लोगों को इतिहास की झलक मिल सके।

भद्र किले का निर्माण वर्ष 1411 में अहमदाबाद शहर की स्थापना के तुरंत बाद किया गया था। इसका द्वार अहमदाबाद किले का पूर्वी प्रवेश द्वार है, जो साबरमती नदी के पश्चिम में स्थित है।

इसकी छत से आप आसपास की सड़कों की भव्य संरचना और दृश्यों को देख सकते हैं। किले और तीन दरवाजा के बीच इसके पूर्व में शाही मैदान (रॉयल स्क्वायर) था, जहां शाही जुलूस और पोलो खेल होते थे। भद्र किले में अब सरकारी कार्यालय और एक काली मंदिर है।

धरा गुर्जरी

वर्ष:2023-24 अंक-1

संरक्षक:

श्री सौरभ कुमार जयपुरियार, महानिदेशक

श्री विजय एन.कोठारी, महालेखाकार

संपादक मंडल:

श्रीमती मोनिका दवे, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

डॉ. संदीप कुमार बाजपेई, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री रवीन्द्र सचान, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती धनवंती टिब्बानी सिसोदिया, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादकीय

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), अहमदाबाद एवं महालेखाकार (लेखापरीक्षा- II) गुजरात, अहमदाबाद के कार्यालयों की संयुक्त हिंदी पत्रिका "धरा गुर्जरी" का वर्ष 2023-24 का प्रथम अंक आप सभी के समक्ष हर्ष के साथ प्रस्तुत है।

पूर्व के प्रयासों की निरन्तरता को यथावत रखते हुए पत्रिका के इस अंक में आवरण पृष्ठ तथा पार्श्व पृष्ठ में राज्य की संस्कृति की झलक दर्शाते वास्तुकला, हस्तकला तथा समारोहों इत्यादि के चित्रों एवं विवरण को समाविष्ट किया गया है। इस अंक में भद्र किला, टेराकोटा एवं मोढेरा नृत्य उत्सव आवरण पृष्ठों पर सम्मिलित किए गए हैं।

आप सभी का ध्यान आकृष्ट करना है कि पत्रिका के इस अंक में दोनों कार्यालयों के सदस्यों ने अपने स्वरचित अनुभवों, संस्मरणों, विचारों को विभिन्न लेखों, तथा कविताओं के माध्यम से व्यक्त कर योगदान दिया है।

संपादक मण्डल एवं संरक्षक मण्डल कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- II) तथा महानिदेशक कार्यालय के सदस्यों का आह्वान करते हैं कि अधिकाधिक संख्या में स्तरीय स्वरचित रचनाएँ प्रदान करने का प्रयास करें ताकि के क्रम को जारी रखें।

अस्वीकरण - इस अंक में सम्मिलित रचनाओं में व्यक्त विचारों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष उत्तरदायित्व स्वयं रचनाकारों का है जिन से संपादक मण्डल या कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

संपादकीय				i
अनुक्रमणिका				ii
क्रम	रचना का नाम	रचनाकार	विधा	पृष्ठ
1.	कब तक ?	श्री अनिल कुमार बेनीवाल (व.ले.प.अ.)	कविता	1
2.	चन्द्र सा साक्षी कहाँ	श्री अभिषेक कुमार (हिंदी अधिकारी)	कविता	2
3.	सच या सही	श्री अभिषेक पंवार (व.ले.प.अ.)	लेख	3
4.	ध्वनि प्रदूषण	श्री उमा शंकर यादव (डी.ई.ओ.)	लेख	6
5.	दौर आत्मविश्वास का	श्रीमती कुसुम लता (वरिष्ठ हिंदी अनुवादक)	कविता	9
6.	अविस्मरणीय दौरा	श्री गोपाल लाल मीना (उप महालेखाकार)	लेख	11
7.	मलाल	श्री चिट्टू एम. गुप्ता (व.ले.प.)	लेख	14
8.	यादे बीते समय की: डाकिया	श्री जयंत (लेखापरीक्षक)	लेख	16
9.	काफ़ी हूँ	श्री दीपेश गुप्ता (व.ले.प.)	कविता	19
10.	साक्षात्कार	श्री नरेश सिंह (स.ले.प.अ.)	लेख	20
11.	यात्रा वृतांत	श्री प्रवीण कुमार सिसोदिया (व.ले.प.अ.)(वा.)	लेख	23
12.	छुक छुक करती चलती रेल (जिंदगी)	श्री बिनय कुमार (लेखापरीक्षक)	कविता	25
13.	तुलसी के पौधों का वितरण	कार्यालयीन गतिविधि	लेख	27
14.	स्वप्न—जिसने आँखे खोल दी	श्री मयंक मिश्रा (स.ले.प.अ.)	लेख	33
15.	प्रारब्ध (डेस्टिनी)	श्री मछावरम श्रीनिवास राव (स.पर्यवेक्षक)	लेख	36
16.	संवाद से विवाद तक	श्रीमती मोनिका दवे (व.ले.प.अ.)	लेख	38
17.	पापड़	श्री राजकुमार सिंहल (स.ले.प.अ.)	लेख	44
18.	वीर कुँवर एक मिसाल	श्री रुपेश रंजन तिवारी (व.ले.प.)	कविता	46

19.	संतुलन की सार्थकता	श्री रौशन कुमार मीना (स.ले.प.अ.)	लेख	47
20.	बबूल: साहस की परिसीमा	श्री लोकेश कुमार मीना (स.ले.प.अ.)	कविता	49
21.	मेरी प्यारी माँ	श्रीमती विद्याअय्यर (स.पर्यवेक्षक)	कविता	51
22.	भाव, ध्यान और आत्मबोध	श्री विशाल बड़जात्या, (स.ले.प.अ.)	लेख	52
23.	कहना था कुछ	श्री विशाल बड़जात्या, (स.ले.प.अ.)	कविता	54
24.	दौर आत्मविश्वास का	श्रीमती स्वाति सिंह, (स.ले.प.अ.)	कविता	55
25.	भारतीयों की समयबद्धता	डॉ. संदीप बाजपेई (व.ले.प.अ.)	लेख	57
26.	जिंदगी का सफर	सुश्री सुनीता शॉ (लेखापरीक्षक)	कविता	60
27.	परिवर्तन	श्री हर्षद आर परमार (लेखापरीक्षक)	कविता	61
28.	जिंदगी गुलजार है	श्री हर्ष वर्धन (लेखापरीक्षक)	कविता	62
29.	काश! मेरे बच्चे भी ऐसे होते	श्री विजय एन. कोठारी (महालेखाकार)	लेख	63

प्रकाशन सहयोग

1. श्री पवन सिंगला, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी /राजभाषा, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद
2. श्री अभिषेक कुमार, हिंदी अधिकारी, कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय), अहमदाबाद
3. श्री चिट्टू गुप्ता, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद

आवरण पृष्ठों के चित्र एवं विवरण - गुजरात टूरिज़्म से साभार

कब तक?

अनिल कुमार बेनीवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कब तक गुलामी की मार और विभाजन के घाव को सहलाते रहेंगे?
क्या उन अभिशप्त दिनों को भूल, हम आगे और आगे बढ़ नहीं सकते?
कब तक स्वप्नों की दुनिया और आशंकाओं के आसमानों में विचरते रहेंगे?
क्या हकीकत की धरा पर अपने श्रम से, हम हल जोत नहीं सकते?
कब तक रूढ़ियों के दलदल और अंधविश्वासों की आंधियों में भटकते रहेंगे?
क्या सत्य और तर्क के पंख लिए, हम ऊंची उड़ान भर नहीं सकते?
कब तक लालच की लपटों और लोभ की लकीरों से घिरे रहेंगे?
क्या मेहनत और ईमानदारी की लहरों पर, हम जीवन नौका तार नहीं सकते?
कब तक भूत के पछतावे और भविष्य के भय के साये में यूँ ही घुटते रहेंगे?
क्या वर्तमान के संगीत की धुन पर, हम अपनी मौज में नाच नहीं सकते?
कब तक यूँ ही जीवन भर एक कीड़े की भाँति जमीन पर रेंगते रहेंगे?
क्या सिंह की हुंकार लिए चीते की रफ्तार से, हम दौड़ नहीं सकते?

चन्द्र सा साक्षी कहाँ

अभिषेक कुमार
हिंदी अधिकारी

गोधूलि वेला, सूर्य का साम्राज्य डूबा
केशरी लालिमा से रथ सुशोभित
चन्द्र-रश्मि संदेश लाई
धीमे-धीमे चक्र वेग पकड़ें
जहां कहीं भी दृष्टि पहुंचे
चंद्रमा की पताका लहराई।

चाँदनी संग शीतलता
चन्द्र का नित रूप नया
कभी हास बन शोभता
कभी अर्ध-वृत्त प्याली बना
कभी त्याग चादर को मैले
पूर्ण होकर ये खिला।

स्वर्ण-वर्ण, पूर्णिमा अवस्था
चन्द्र अमृत घट बना
बाल-बचपन कौतुक में
चन्द्र की उपस्थिति सदा
और अमृत गाथाओं का
चन्द्र सा साक्षी कहाँ।

अगर आपके जीवन में कभी ऐसी परिस्थिति आ जाए, जब सच और सही दोनों एक साथ न हों, तब आप क्या चुनेंगे? क्या आपने कभी सोचा कि सच या सही में किसका पलड़ा भारी है? क्या आपको लगता है कि सच, सही होने से ज्यादा महत्त्व रखता है, या फिर सही होना ... सही है? मुझे लगता है कि साधारणतया, हम सच को चुनते हैं जब तक ऐसी दुविधा न आ जाए कि सच वह नहीं दर्शाता जो आपके लिए सही है। अतः कह सकते हैं कि हम परिस्थिति के अनुसार खुद के लिए सच या सही को चुनते हैं। ये तो हुई अपनी बात, परंतु दूसरों के मामले में हम इसके विपरीत बर्ताव करते हैं, अर्थात् चाहे दूसरे की भलाई करना एक सही निर्णय हो पर हम सच को पकड़ कर बैठे रहते हैं। आदमी कितना बड़ा हिपोक्रिट, पाखंडी होता है। खैर... इस बारे में मैं क्या ही कह सकता हूँ क्योंकि मैं एक शादी शुदा इंसान हूँ और मेरी पत्नी तो मुझे रोज़ ही पाखंडी बुलाती है।

चलिये सच और सही के संबंध में आपसे अपने बचपन की दो घटनाएँ साझा करता हूँ...जब मैं छोटा था तब मेरे और मेरे भाई, जो मुझसे दो साल बड़ा था, में झगड़ा हो रहा था। क्योंकि वह मुझसे बड़ा था, अतः लड़ाई में उसका ही पलड़ा भारी था। लड़ते-लड़ते मुझसे एक कीमती मूर्ति ज़मीन पर गिरकर टूट गई, पर क्योंकि मेरा पलड़ा हल्का पड़ रहा था, तो मैंने तुरंत ही सच का साथ छोड़ दिया और वो अपनाया जो मुझे सही लगा, अर्थात् मूर्ति टूटने का ठीकरा मैंने भाई के सिर पर फोड़ दिया। पर मेरी आशाओं के विपरीत मेरे भाई ने इस बात का कोई विरोध नहीं किया और दोनों के हिस्से की डांट अकेले ही खा ली।

उस समय तो मैं एक विजेता की तरह महसूस कर रहा था, पर मैं आज जब इस बारे में सोचता हूँ तो मुझे लगता है कि भले ही हम झगड़ रहे थे, पर भाई ने मुझे बड़ों की डांट से बचाने के लिए ऐसा किया। उस वक्त हम दोनों ने सच को न चुन कर सही को चुना, परंतु दोनों 'सही' एक दूसरे से कितने अलग थे।

एक दूसरी घटना में, जब फिर से हम दोनों भाइयों के झगड़े के चलते, सच में बड़े भाई से एक कीमती सामान टूट गया। अब क्योंकि झगड़ तो हम दोनों ही रहे थे अतः सामान टूटने की ज़िम्मेदारी भी दोनों की बराबर बनती थी। पर इस बार मैंने सच को चुना और भाई द्वारा टूटे सामान के बारे में बड़ों को बताया। फिर से भाई ने कोई विरोध नहीं किया, और बड़ों की डांट खाई।

इस बार मैंने सच का साथ दिया पर सही का नहीं। पर मेरे भाई ने सच के साथ-साथ जो उसे सही लगा उसका साथ दिया। आज मैं सोचता हूँ तो पाता हूँ कि सच और सही को एक साथ ले आना, एक विलक्षण प्रतिभा है।

खैर...जब दोनों घटनाएँ और उन घटनाओं पर मेरे विचार मैंने अपनी पत्नी को बताए, तो उसने कहा, "पहली घटना के समय बड़े भैया को सच का साथ देना चाहिए था और दूसरी घटना के समय सिर्फ सही होने का कम से कम तुम एक ढंग के इंसान तो बन जाते।" उस दिन से मैं ये सोच रहा हूँ कि क्या मैं एक ढंग का इंसान नहीं हूँ। पर शादी होने के बाद, अब इस बात से, कम से कम घर में तो, कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि मैं एक ढंग का इंसान हूँ या नहीं क्योंकि जिन लोगों को उनकी पत्नी 'ढंग का इंसान' समझती हैं उन्होने ही कौन सी दौड़ जीत ली... मैं तो सिर्फ़ इसी बात से खुश हूँ कि मेरी बीवी ने मेरी ये बातें सुनी तो सही।

पर इस सब में सोचने वाली बात यह है कि किसी एक वक्त पर सच का साथ देने से आगे आने वाले समय में विषम परिस्थिति आने पर क्या हम सच और सही को एक साथ लाने में कामयाब हो सकते हैं। मेरे हिसाब से किसी व्यक्ति का किसी समय पर सच या सही में से एक को चुनना उसकी सोच, उसके व्यक्तित्व को दर्शाता है, खास तौर पर जब वह दूसरे के संबंध में निर्णय ले रहा हो।

मेरे हिसाब से तो एक आदर्श व्यवस्था में सच और सही एक साथ चलने चाहिए। परंतु ऐसा होना व्यावहारिक रूप से बहुत मुश्किल होता है। जब कोई इंसान इसलिए सच का साथ दे कि भविष्य में वह सच और सही को एक साथ ला सकता है तो सच का साथ देना ज्यादा जरूरी हो जाता है। यह कर पाना एक मुश्किल कार्य है क्योंकि किसी एक निश्चित समय पर भविष्य के बारे में सोच कर निर्णय लेना आसान नहीं, और इसीलिए मैंने उपरोक्त घटनाओं में अपने भाई को एक विलक्षण प्रतिभा कहा है।

उपरोक्त विचार मेरे परिप्रेक्ष्य से लिखे गए हैं। इस लेख को पढ़ने वाले आप लोगों के परिप्रेक्ष्य में यह विचार बिल्कुल उलट भी हो सकते हैं क्योंकि किसी विषय के बारे में सोचकर उस पर टिप्पणी करना या उसका विश्लेषण करना एक बहुत ही आत्मनिष्ठ एवं व्यक्तिपरक (subjective) बात है, जिसे वस्तुनिष्ठता (objectivity) से परिमाणित नहीं किया जा सकता।



एच एल कॉलेज ऑफ कॉमर्स, अहमदाबाद में ऑडिट आउटरीच कार्यक्रम

ध्वनि प्रदूषण

उमा शंकर यादव
डाटा एंट्री ऑपरेटर

ध्वनि प्रदूषण की समस्या बहुत ही खतरनाक है जो भारत के साथ-साथ विश्व भर में फैल रही है। ध्वनि प्रदूषण अन्य प्रदूषणों के समान ही हानिकारक होता है। ध्वनि प्रदूषण वातावरण में अत्यधिक शोरगुल को दर्शाता है। ध्वनि प्रदूषण से न केवल मानव जाति बल्कि अन्य जीव-जंतुओं को भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जब ध्वनि की तीव्रता इतनी अधिक हो कि सुनने वाले का मन अशांत और चिड़चिड़ापन होने लगे तो इसे ध्वनि प्रदूषण कहते हैं।

उदाहरण :- कारखानों कि मशीनों से निकलने वाली तेज ध्वनि, वाहनों से होने वाली तेज ध्वनि इत्यादि।

मानक: विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की रिपोर्ट के अनुसार निद्रा अवस्था में आसपास के वातावरण में 35 डेसीबल से अधिक शोर नहीं होना चाहिए। दिन का शोर 45 डेसीबल से अधिक नहीं होना चाहिए।

ध्वनि प्रदूषण के स्रोत :-

- प्राकृतिक स्रोत :-
 1. ज्वालामुखी का फटना
 2. बादल का गरजना
 3. तूफान का आना
 4. बिजली की कड़क
- मानव स्रोत :-
 1. त्योहारों और शुभ कार्यों में चलाए जाने वाले पटाखे।
 2. कारखानों की मशीनों से होने वाली ध्वनि।

3. परिवहन के वाहनों से उत्पन्न होने वाली ध्वनि।
 4. मनोरंजन के साधन जैसे- लाउड स्पीकर से उत्पन्न होने वाली ध्वनि।
- ध्वनि प्रदूषण का मानव जीवन और प्राणी जीवन पर प्रभाव :-
 1. तीव्र ध्वनि के कारण मानव और अन्य जीवों में अनिद्रा और चिड़चिड़ापन और बेचैनी उत्पन्न हो जाती है।
 2. अत्यधिक शोर से मनुष्य की मानसिक दशा में एकाग्रता और कार्यक्षमता में कमी आती है।
 3. तीव्र ध्वनि के कारण पशु-पक्षियों में संचार नहीं हो पाता है जिसके कारण अनेक प्राकृतिक आवास विलोपित होते जा रहे हैं।
 4. अधिक ध्वनि से मानव के कानों के सुनने की क्षमता कम होती जा रही है।
 5. अधिक ध्वनि से तनाव सिरदर्द और हृदयघात जैसी बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।
 6. ध्वनि प्रदूषण चिड़चिड़ेपन का भी कारण है। स्पेन के शोधकर्ताओं द्वारा 2005 में किए गए एक अध्ययन में पाया गया है कि शहरी क्षेत्र में रहने वाले लोग ध्वनि प्रदूषण में कमी लाने के लिए प्रतिवर्ष लगभग चार यूरो खर्च करना चाहते हैं।

दुष्परिणाम :-

पर्यावरण में अवांछित ध्वनि जिसे ध्वनि प्रदूषण कहा जाता है स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है तथा बहरेपन व मानसिक तनाव की समस्या उत्पन्न होती है, इसके कारण मानव के व्यवहार में चिड़चिड़ापन देखा गया है। तेज शोर से कान के परदों का खराब होना, कान में दर्द आदि समस्याएँ जन्म लेती हैं। समुद्री जानवर भी इससे अछूते नहीं हैं पानी में पनडुब्बी और समुद्री जहाजों की ध्वनि के कारण ध्वनि प्रदूषण होता है। मुख्यतः मछलियाँ आदि की मृत्यु के मुख्य कारणों

में से ध्वनि प्रदूषण एक है क्योंकि वे भोजन कि खोज के लिए सुनने की क्षमता का ही प्रयोग करती हैं।

ध्वनि प्रदूषण से बचाव के उपाय :-

ध्वनि प्रदूषण से निजात पाने के हेतु आम नागरिक तथा सरकार के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है। इसके लिए ध्वनि और शोर की तीव्रता पर और अत्यधिक प्रेशर वाले हॉर्न पर रोक लगाया जाए। हरे पौधे ध्वनि की तीव्रता 10 से 15 डेसीबल तक कम कर सकते हैं। अतः हरे पौधे अधिक से अधिक लगाए जाने चाहिए। कुछ और उपाय इस प्रकार हैं :-

1. कारखानों को शहर से दूर स्थापित करना चाहिए।
2. फैक्टरियों द्वारा उत्पन्न शोर को काम करने के नवीन तकनीक का प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए शोर सूचक डिवाइस का प्रयोग करना चाहिए।
3. फैक्टरियों में मशीनों का रख-रखाव सही करके मशीनों के शोर को काम किया जा सकता है।
4. अधिक शोर उत्पन्न होने वाली मशीनों का उपयोग कम करना चाहिए।

उपसंहार :-

ध्वनि प्रदूषण एक अत्यंत खतरनाक परिस्थिति है। ध्वनि प्रदूषण शहरी क्षेत्रों के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को भी प्रभावित कर रहा है। इसे नियंत्रित करने हेतु उपायों को अपनाने की अति-आवश्यकता है, जिसके लिए जन-जन को जागरूक किया जाना चाहिए।

दौर आत्मविश्वास का

कुसुम लता
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

विश्वास, अपने साथ लेकर चलता है
ये एक दौर, एक भरा पूरा जीवन !

जो मन इसको भा जाता है,
उसे ये अपना घर चुनता है,
पहले होता है वहाँ जन्म इसका,
फिर ये बड़ा होने लगता है !

कभी मन की बातों से,
कभी मुलाकातों से इसे सींचा जाता है!
शनैः शनैः ये जवान होता है,
और अतुलनीय बन जाता है!
बड़ा सहज लगता है यूँ बढ़ना इसका ।

जिस भी मन पर ये ठहरता है,
पूरा ग्रहस्थ सा रहता है
उसके साथ संवरता है,
इतराता है, घमंड करता है,
चाह करता है, मांग करता है,
सवाल करता है और जवाब भी चाहता है,
और फिर चाह करता है,
थोड़ी और मांग करता है ।

और फिर बार बार
बस यही दोहराता है ।
इस दोहराई से
फिर से बूढ़ा होने लगता है,
मुरझा जाता है सिकुड़ जाता है और
बेजान सा हो जाता है,
और एक दिन ये मर जाता है ।

ये दौर आजीवन यूँ ही चलता है ।
बार बार विश्वास ऐसे ही जन्म लेता है
और हर बार ये यूँ ही मर जाता है
पर एक दिन इस संघर्ष को जीतकर
एक दिन पहुँच जाता है
एक नए दौर में,
जहां से विश्वास स्वरूप बदल लेता है
और आत्मविश्वास बन जाता है।

बस फिर ये रहता है,
बस जाता है, समा जाता है,
एक लौ की तरह जलने लगता है
मन के प्रगाढ़ अंधेरों में,
रोशन कर देता है हर मन को
और जीने में विश्वास दिला देता है ।
और कुछ इस तरह ये विश्वास आत्मविश्वास बन जाता है।



एच एल कॉलेज ऑफ कॉमर्स, अहमदाबाद में ऑडिट आउटरीच कार्यक्रम

यह घटना जून 2005 की है। उन दिनों मैं सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी था। मुझे जून 2005 में डी.आर.डी.ए. वलसाड का ऑडिट दिया गया था। हमारे ऑडिट का आखिरी दिन 30 जून था। ऑडिट पार्टी में मेरे साथ राजकोट कार्यालय के दो वरिष्ठ लेखापरीक्षक थे। 28 जून की सुबह से लगातार बरसात शुरू हुई जो 30 जून तक भी रुकने का नाम नहीं ले रही थी।

30 जून को ऑडिट पूरा करने के बाद अहमदाबाद जाने के लिए मैं रेलवे स्टेशन गया तो वहाँ बताया गया कि कई स्थानों पर रेलवे लाइन के नीचे से मिट्टी बह जाने से रेलगाड़ियां बंद हैं जो अगले तीन-चार दिन तक नहीं चलेंगी। मैं मायूस हो गया और सोचने लगा कि अब अहमदाबाद कैसे जाया जाएगा।

मुझे एक विचार आया कि क्यों न एक बार प्राइवेट ट्रेवल्स वालों से पूछ लिया जाए तो मैं महासागर ट्रेवल्स के पास गया और अहमदाबाद जाने के लिए पूछताछ की। मेरे अलावा अहमदाबाद जाने वाले और भी सात-आठ यात्री थे। वैसे तो महासागर ट्रेवल्स की बसें अहमदाबाद नहीं जाती थीं, केवल राजकोट ही जाती थीं, लेकिन अहमदाबाद के आठ-दस यात्री होने की वजह से हमें बताया गया कि बस शहर में नहीं जाएगी, सरखेज उतार कर राजकोट जाएगी।

मेरे साथ के राजकोट कार्यालय के दोनों वरिष्ठ लेखापरीक्षकों ने महासागर ट्रेवल्स की राजकोट जाने वाली दूसरी बस का टिकट बुक करवाया था। दोनों बसों ने वलसाड से 5 बजे प्रस्थान किया व रास्ते में करजण के पास हाइवे पर खाने के लिए बस रोकी। वहाँ मेरी मुलाकात दोनों वरिष्ठ लेखापरीक्षकों से हुई। उनकी बस हमारी बस से 20 मिनट पहले रवाना हो गई थी।

8 बजे करजण में खाना खाने के बाद एक्सप्रेस हाइवे के एंट्री पॉइंट पर पहुंची तो बताया गया कि एक्सप्रेस हाइवे जगह-जगह से टूटने के कारण बंद हो गया था। हमारी बस का ड्राइवर बस लेकर नेशनल हाइवे से वासद पहुंचा। वासद पहुँचने

के बाद देखा, पूरे हाइवे पर तीन-चार फुट पानी भरा हुआ था। बस धीरे-धीरे रेंगकर चल रही थी। स्लीपर बस होने की वजह से रात में तो नींद आ गई।

सुबह जब आँख खुली तो देखा बस आणंद ही पहुंची थी। आणंद में चाय पीने के बाद बस रवाना हुई। रोड पर बहुत पानी भरा हुआ था। ट्रैफिक धीरे-धीरे रेंगकर चल रहा था जिसकी वजह से ट्रैफिक जाम भी हो गया था। हमारी बस के यात्रियों ने ड्राइवर को लाइन तोड़कर आगे बढ़ने के लिए उकसाया। ड्राइवर लाइन तोड़कर 500 मीटर ही चला होगा कि वहाँ पुलिस की गाड़ी ट्रैफिक कंट्रोल के लिए खड़ी थी। उन्होंने हमारी बस के ड्राइवर की लाइन तोड़ने के कारण बुरी तरह से पिटाई कर दी जिससे वह यात्रियों पर नाराज़ हो गया और बस को आगे बढ़ाने से मना कर दिया। यात्रियों के काफ़ी मिन्नतें करने के बाद उसने बस को आगे बढ़ाया।

बस दोपहर एक बजे नडियाद चौकड़ी पहुंची। वहाँ यात्री खाने के लिए उतरे। होटलों में पूछताछ करने पर पता चला कि खाने-पीने के लिए कुछ भी उपलब्ध नहीं है। सभी यात्री भूखे-प्यासे वापस बस में बैठ गए। बस आगे बढ़ी व नडियाद चौकड़ी से पाँच किलोमीटर आगे बस को रोक दिया गया क्योंकि आगे वात्रक नदी में बाढ़ की वजह से रोड पर तीन किलोमीटर तक चार-पाँच फुट पानी भरा हुआ था। बस के सभी यात्रियों ने निश्चय किया कि बस को यहीं रोका जाए व आज की रात यहीं बिताई जाए। सभी यात्री इधर-उधर घूमकर खाने-पीने की तलाश करने लगे लेकिन कुछ मिला नहीं। तभी कुछ लोग बाइक पर आए और उन्होंने कि बताया आप खाने की चिंता नहीं करें, स्वामीनारायण के लोग ट्रैक्टर-ट्राली से रोड पर फंसे सभी यात्रियों को खिचड़ी वितरण कर रहे हैं।

इसी बीच किसी ने यह बताया कि ट्रेन रूट चालू हो गया। मैं और चार अन्य यात्री नडियाद स्टेशन पर ट्रेन पकड़ने के लिए पैदल ही चल दिये जो वहाँ से पाँच किलोमीटर दूर था। नडियाद चौकड़ी पहुंचे तब वहाँ स्वामीनारायण की खिचड़ी वितरित की जा रही थी। मुझे भी भूख लगी हुई थी, मैं खिचड़ी खाने वालों की लाइन में लगने के लिए गया तो मुझे वहाँ हमारे कार्यालय के वाणिज्य लेखापरीक्षा के सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी श्री दास लाइन में लगे हुये मिले। उन्होंने बताया कि वे कल सायंकाल बड़ौदा से एस. टी. बस में निकले थे। रात भर धीमी

बारिश भी हो रही थी और बस काफी पुरानी थी जिसमें पानी भी टपक रहा था तो उन्होंने पूरी रात बस में बैठे-बैठे भीगते हुए गुज़ारी।

खिचड़ी खाने के बाद मैं स्टेशन पहुंचा तो वहां पता लगा कि गोठाज के पास रेलवे लाइन के नीचे से काफी एरिया में मिट्टी बह गई है इस वजह से ट्रेनों के चालू होने में दो तीन दिन का समय लगेगा। वह रात मैंने नडियाद स्टेशन पर खड़ी मेमू ट्रेन में गुज़ारी। दूसरे दिन एक्सप्रेस हाइवे की एक लेन चालू हो गई थी तो मैं पैदल चलकर एक्सप्रेस हाइवे पहुंचा और वहाँ से अहमदाबाद घर पहुंचा। अब कभी भी ज़ोर से बारिश होती है तो उस यात्रा का स्मरण हो आता है।



केन्द्रीय विश्वविद्यालय गुजरात, गांधीनगर में ऑडिट आउटरीच कार्यक्रम

ऐसे लोग बहुत कम देखने मिलते हैं जो अपनी मौजूदा परिस्थितियों से संतुष्ट दिखाई दें या यूँ कहें कि उन लोगों को सदैव किसी चीज़ का मलाल या शिकायत लगी रहती है। जैसे ही उनकी एक समस्या समाप्त होती है, वे दूसरी कोई कमी निकाल लेते हैं, असंतुष्ट और व्यग्र दिखने के लिए मानो उन्होंने सदैव अशांत रहने की कसम खाई है।

हर-किसी चीज़ में कमी निकालना उनकी दिनचर्या का हिस्सा होता है और धीरे-धीरे यह प्रकृति उनके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है। दूसरे लोग भी उन्हें अवगत कराना शुरू कर देते हैं परंतु अपनी विचित्रता के बारे में सुनकर वह व्यक्ति अपनी कमियों में सुधार करने की अपेक्षा उसे अपना अद्वितीय गुण समझ बैठता है और अपनी इस विचित्रता को बनाए रखने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है।

मुझे लगता है कि किसी भी परिस्थिति से संतुष्ट या असंतुष्ट होना बहुत हद तक स्वयं की सोच पर निर्भर करता है। कभी-कभी ऐसा होता है कि जिस परिस्थिति या समस्या को देखकर हम चिंतित हो रहे होते हैं, उसी परिस्थिति के बारे में यदि सकारात्मक रूप से विचार करें तो हम अपने आप को खुश और संतुष्ट पाते हैं। यही कारण है कि कभी-कभी मुझे यह एहसास होता है कि मैं व्यर्थ में इसकी चिंता कर रहा था। ये तो मेरे लिए सौभाग्य और आनंद का विषय था। अतःहमें प्रत्येक स्थिति में प्रसन्न रहने का प्रयास करना चाहिए, प्रत्येक क्षण का आनंद लेना चाहिए और इसके लिए हर क्षण का शुक्रगुज़ार होना चाहिए।

कभी-कभी हम किसी व्यक्ति के साथ अपना तालमेल नहीं बैठा पाते और उससे दुखी रहते हैं परंतु उसकी अनुपस्थिति में हमें अहसास होता है कि हम स्वयं गलत थे न कि सामने वाला। हम किसी भी व्यक्ति के साथ ताल-मेल बैठा सकते हैं यदि उसकी कमियों की अपेक्षा उसकी अच्छाइयों को पहले देखें। कभी-कभी हमें लगता है कि हम बेकार जगह पर या शहर में आ गए हैं, ऐसा इसलिए होता है

क्योंकि हम उस स्थान की असुविधाओं पर ही ध्यान देते हैं, वहाँ की सुविधाओं और अच्छाइयों पर हमारा ध्यान नहीं जाता। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी भी परिस्थिति में खुश रहने के लिए आवश्यक है कि हम प्रत्येक वस्तु के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बनाए रखें।



नराकास के तत्वावधान में आयोजित की गई निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को महालेखाकार महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए

'डाकिया', इस शब्द को आज हम उतना ही महत्व देते हैं जितना हम आज के समय में डाकिया के कामकाज के बारे में जानते हैं। आधुनिकता के इस युग में तकनीक के विकास ने डाकिये के महत्व को लगभग खत्म ही कर दिया है। आज के समय में हमें डाकिये के आने की खुशी केवल तब ही होती है जब वह हमारे लिए कोई महत्वपूर्ण सरकारी दस्तावेज़ लेकर आता है क्योंकि इस समय केवल सरकारी कागज़ ही डाक विभाग से आते हैं, नियुक्ति पत्र उन में से एक है।

एक समय हुआ करता था जब डाकिया पूरे समाज में बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। पुराने समय में वह डाकिया ही होता था जो परिजनों व परिवार के शुभ समाचार, उनका कुशल क्षेम, कोई शोक समाचार चिर-परिचितों तक पहुंचाता था। जब भी डाकिया घर की तरफ़ आता हुआ दिखाई देता था तो हम हर्षोल्लास से भर जाते थे कि हमारे जानने वालों का कुशल समाचार लाया होगा, कभी कभी तो हम खुशी के मारे उछल ही पड़ते थे जब हमें पता चलता था कि हमारे परिवार में हमारी किसी प्रिय बहन या प्रिय भाई के विवाह का बुलावा आया है, और हमें अपने परिवारजनों व परिचितों से मिलने का मौका मिलेगा, या फिर कभी कभी हमें खुशख़बरी मिलती थी कि किसी परिचित के घर कोई नन्हा मेहमान आया है और हमारे मन में उसे देखने की लालसा जाग पड़ती थी।

यदि समाचार बहुत ही अच्छा होता था तो हम डाकिये को बहुत ही मान-सम्मान देते थे, उसके लिए गुड़ की बजाय चीनी की चाय बनती थी और नाश्ते, मिठाई व अन्य पकवान भी खिलाये जाते थे। किन्तु यदि भेजी गयी चिट्ठी में कोई शोक समाचार होता था तो बेचारा डाकिया भी शोकाकुल हो जाता था। यदि किसी की मृत्यु का सन्देश होता था तो वह डाकिया ही होता था जो किसी परिचित की भांति ढाँढ़स बंधाता था।

एक समय हमेशा ही ऐसा होता था जब उसके आने की खुशी ही होती थी, जब भी वह आपके पुत्र/पुत्री या आपकी सरकारी नौकरी की नियुक्ति का पत्र लाता था

अथवा किसी वृद्ध दंपति के लिए मनी आर्डर लाया करता था, जिनका पुत्र/पुत्री किसी बड़े शहर में जाकर नौकरी कर रहा होता था। किसी माता-पिता के लिए केवल मनी आर्डर ही होता था जिस से उनका घर व दाल-रोटी चलती थी। मनी आर्डर के साथ साथ डाकिया उनके पुत्र/पुत्री के कुशल क्षेम का समाचार भी लाया करता था, जिसका माता-पिता को मनी आर्डर से भी ज़्यादा इंतज़ार होता था।

इस सब के अलावा डाकिया एक और बहुत ही महत्वपूर्ण काम भी करता था। पुराने समय में शिक्षा का अभाव होने के कारण बहुत से लोग लिखने में सक्षम नहीं होते थे, तो वह उन सबके लिए कलम बन जाता था, न जाने कितने ही पत्र उसने लोगों के मन की भावनाओं को व्यक्त करते हुए लिखे होंगे, न जाने कितने ही लोगों के कुशल क्षेम उनके परिचितों तक पहुंचाए होंगे।

जब कभी किसी पत्र लिखवाने वाले के पास शब्द कम पड़ जाते थे या उसे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कोई उचित वाक्य नहीं मिलता था तो डाकिया अपने अनुभव से सही शब्दों का चयन कर पत्र लिखने में हमारी सहायता करता था। इन सब कार्यों को वह अपना कर्तव्य समझ कर खुशी-खुशी करता था और कृतज्ञता से हम भी उसे कभी चाय, कभी कॉफ़ी, कभी नाश्ता, कभी छाछ, कभी शिकंजी, कभी रबड़ी, कभी सत्तू इत्यादि खिलाते-पिलाते थे।

आधुनिकता, विकास व तकनीक ने डाकिए के महत्व को भले ही कम कर दिया हो किन्तु वह पुराना डाकिया अपनी साइकिल पर घंटी बजाता हुआ घर घर जाकर खुशियाँ बांटता अथवा शोक समाचार मिलने पर हमारा सहारा बनता था।

वह डाकिया आज भी हमारे हृदय में बहुत ही सम्माननीय जगह बनाये हुए है। आज उसके कामकाजी कर्तव्य कम ज़रूर हो गये हैं किन्तु वह डाकिया उनका निर्वहन आज भी उसी प्रकार कर रहा है।

डाकिया आया रे डाकिया आया

चिट्टियों संग खुशियाँ हज़ार लाया,

डाकिया आया रे डाकिया आया.....

मनी आर्डर संग प्यारों की कुशल क्षेम भी लाया,
लाया शोक समाचार पर संग में धैर्य और ढाँढस लाया,
डाकिया आया रे डाकिया आया.....
अपने शब्दों में पिरो हमारी भावनाएं परिजनों तक ले जाने आया.



महानिदेशक महोदय द्वारा पश्चिमी क्षेत्र टेबल-टेनिस प्रतियोगिता का शुभारंभ

क्यूँ खुद पे ही मैं, हर बार सवाल उठाती हूँ...
हूँ ये जानती कि मैं खुद में खुद ही काफ़ी हूँ।

संभाल लेती हूँ अक्सर खुद को फिर भी,
ना संभाल सकी तो कभी ?
इस बात से डर-सी जाती हूँ लेकिन,
हूँ ये जानती कि मैं खुद में खुद ही काफ़ी हूँ।

ना है शिकायत किसी से, ना ही है उम्मीद,
जो ना आये दिल को रास, वो भी मैं अपनाती हूँ,
हूँ ये जानती कि मैं खुद में खुद ही काफ़ी हूँ ।

प्यार के मोतियों से रिशतों की माला बनाती हूँ,
उस माला के हर मोती पे समान प्रीत लुटाती हूँ,
जब नहीं मिलता वो प्रीत मुझे तब खुद को समझाती हूँ,
हूँ ये जानती कि मैं खुद में खुद ही काफ़ी हूँ ।

हौंसला है देता ये मन मेरा, समझाता मुझको रहता है,
है यकीन मुझको तुझ पर, संभालना तुझे आता है,
अरे! गिर जाओगी तो क्या हुआ, उठकर चलना भी तुझे आता ह
इस बात से वाकिफ तो हूँ मैं भी, मैं खुद में खुद ही काफ़ी हूँ।

मैं खुद में खुद ही काफ़ी हूँ.....।।

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न दौर में गुज़रते हुए अपने अनुभव से खुद की किताब और पाठशाला का निर्माण करता है। यह हर उस व्यक्ति के साथ संभव है जिसने अपने जीवन में अलग-अलग पड़ाव और मिले अवसरों के अनुभवों को याद रखा है और उन यादों से सीख ली है। मैं यह भी स्वीकार करता हूँ कि संभव हो कि यहाँ कोई अपवाद भी हो लेकिन इस वाद-विवाद में न पड़ते हुए अपनी बात आगे बढ़ाता हूँ।

मैंने भी अपने अब तक के जीवन में कुछ ऐसे अनुभवों को पाया है जो एक किताब और पाठशाला को चरितार्थ करते हैं। इसी तरह की अपनी किताब के एक पृष्ठ से एक ऐसे अनुभव का मैं यहाँ उल्लेख करूँगा। मैं यह भी उम्मीद करूँगा कि आप स्वयं या आपके किसी अपने को कभी ऐसे अवसर / मौके से दो चार होना पड़े तो अपने स्मृति गृह के उस पृष्ठ को उलटें जिस पर इस लेख को स्मृति की स्याही से अंकित किया गया है।

33 कर्मचारी चयन आयोग, भोपाल, सेना के अधिकारियों के चयन की प्रक्रिया हेतु एक केंद्र है। वहाँ की प्रक्रिया बहुत जटिल और उलझी हुई कही जा सकती है क्योंकि वहाँ अपने चुनाव का अंदाज़ा लगाना बहुत कठिन है और अक्सर आश्चर्यचकित परिणाम आते हैं। मैं जनवरी 2001 में इस प्रक्रिया में शामिल होने गया था। पहले दिन स्क्रीनिंग टेस्ट और अन्य कुछ टेस्ट हुए। दूसरे दिन मेरा साक्षात्कार का दिन था और मैं अपने बैच (Batch) में साक्षात्कार के लिए जाने वाला पहला उम्मीदवार था। इस कारण यह अनुमान लगाना कठिन था कि इंटरव्यू में कौन-कौन होंगे और पैनल का व्यवहार कैसा होगा। लेकिन जब मैं वहाँ तक पहुँच चुका था तो आगे की चुनौती के लिए भी तैयार था। यह भी स्वीकार करता हूँ कि कुछ नर्वस भी था।

मैं अपने निर्धारित समय पर उस कक्ष के सामने जा पहुंचा जहाँ मुझे साक्षात्कार के लिए बुलाया गया था। दरवाज़ा खुला था और कक्ष में सेना के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। मैं दरवाज़े के सामने इस तरह खड़ा था कि उन्हें व्यवधान भी न हो और वो मुझे देख भी सकें। काफी समय बीत जाने के बाद भी उन्होंने मुझे नहीं बुलाया और मैंने भी अन्दर जाने की नहीं सोची। काफी समय ऐसे ही बीत गया। तब तक दूसरा उम्मीदवार भी वहाँ अपने समय के अनुसार पहुँच गया। मैंने आखिर फ़ैसला किया कि मुझे अन्दर जाने का निवेदन करते हुए स्वयं के आने की सूचना दे देनी चाहिए। मैंने ऐसा ही किया। मेरे इस फ़ैसले का यह परिणाम हुआ कि महोदय ने अपने तोपखाने रूपी अंग्रेज़ी के शस्त्रागार में से गोले रूपी लम्बे-लम्बे शब्दों को निकाला और मेरे ऊपर दागना शुरू कर दिया। मेरे पास सुरक्षा कवच के रूप में सिवाय संयम के कुछ नहीं था। शायद मुझे यह अहसास करवाने का प्रयास किया गया कि मैंने शेर के मुँह में हाथ डाल दिया यानि गलती कर दी है और मैं असहज महसूस करूँ। लेकिन मैं मन में स्वयं को सही मानता रहा और उनकी अंग्रेज़ी का मेरी सहजता और संयम पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा।

कुछ समय बाद महोदय श्री बिल्कुल सामान्य हो गए और मुझसे उस लम्बे-चौड़े कक्ष में दूर रखी कुर्सी पर बैठने का विनम्रतापूर्ण आग्रह किया गया जिसे मैंने धन्यवाद कर के स्वीकार किया। कुर्सी बहुत दूरी पर थी जो संभवत मेरी शारीरिक भाषा यानी मेरे हाव-भाव से भी कुछ जानने के इरादे से रखी गई थी।

अब साक्षात्कार आरम्भ हुआ। कुछ समय के बाद वही महोदय श्री मुझे सहज कर घुलने-मिलने की कोशिश में दिखाई दिए जिससे मेरे संयमित व्यवहार में कोई बदलाव देख सके या यूँ कहें कि मैं घुलने-मिलने के बाद कुछ छिपाने की कोशिश न करूँ। साक्षात्कार के दौरान एक वक्त ऐसा भी आया कि महोदय श्री ने एक साथ 10-12 बड़े बड़े प्रश्नों की बौछार कर दी और मुझसे सभी के उत्तर एक साथ देने का आग्रह किया। ऐसी स्थिति के लिए न तो मेरा अभ्यास था और न ही मुझे अहसास था। मैंने कुछ साक्षात्कार लेख पढ़े लेकिन ऐसा अनुभव किसी ने नहीं साझा किया था।

अमूमन वहां 20-25 मिनट में साक्षात्कार पूर्ण हो जाता है लेकिन मेरा साक्षात्कार 70-75 मिनट चला और उस बैच में सबसे लम्बा साक्षात्कार मेरा ही रहा। साक्षात्कार के बाद उन्होंने मुझे सराहा और गुडलक भी कहा।

मैंने अगले दिन अपने इस अनुभव को वहां अन्य उम्मीदवारों से जब साझा किया तो कुछ अन्य के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। वहां पर रहते हुए मैं सिर्फ इतना ही अहसास/अनुमान कर पाया कि उस अधिकारी का बर्ताव एक योजनाबद्ध रणनीति का हिस्सा था। उम्मीदवार के आत्मविश्वास को हिलाने/परखने और उसकी स्मरण शक्ति को भापने का उनकी तरफ से प्रयास था। दूर रखी कुर्सी भी वहां साक्षात्कार में शामिल उम्मीदवार के लिए बड़ी परीक्षा थी।

इस साक्षात्कार और वहां की प्रक्रिया के अनुभव के आधार पर मेरी सीख की इस किताब में एक पृष्ठ जुड़ गया कि मनुष्य को जीवन की हर परीक्षा में पाठ्यक्रम से बाहर (out of syllabus) के कठोर प्रश्न/स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि जीवन के हर मोड़/परीक्षा में आपके अनुमान के अनुसार प्रश्न और कठिनाइयाँ नहीं होंगी जिसके लिए आपको हमेशा तैयार रहना चाहिए।

उम्मीद है कि जब कभी आप या आपके अपनों को ऐसा अवसर मिलेगा तो स्वयं को तैयार रखेंगे।



एच एल कॉलेज ऑफ कॉमर्स, अहमदाबाद में ऑडिट आउटरीच कार्यक्रम

प्रवीण कुमार सिसोदिया
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

06 जुलाई 2022 मैं अपने पिताजी के साथ व्यक्तिगत कार्य से अहमदाबाद से इंदौर गया था। हमें वहाँ अपना कार्य करने में पाँच दिन लग गए और क्योंकि मेरी बच्ची छोटी है, मुझे उसकी बहुत याद आ रही थी। वह रोज़ पूछती थी “पापा आप कब आओगे?” जैसे ही हमारा कार्य पूर्ण हुआ जैसे ही हमने तत्काल रेल की टिकिट ले ली कि यदि रात को 10.45 की ट्रेन में बैठेंगे तो सुबह 8.30 बजे अर्थात् 11 घंटे में अहमदाबाद पहुँच जाएंगे। मुझे बहुत ज्यादा उत्साह था कि मैं पाँच दिन बाद अपनी पुत्री से मिलूँगा क्योंकि उसके जन्म के बाद से अभी तक मैं ज्यादा दिन उससे दूर कभी नहीं रहा क्योंकि रात को सोना ही था तथा सुबह जल्दी पहुँच जाना था इसलिए हमने खाने के लिए भी कुछ नहीं लिया यह सोच कर कि सुबह घर पहुँच कर घर का ही खाना खाएँगे।

रात को अपनी बिटिया को याद करते और थकान की वजह से कब नींद आ गयी पता ही नहीं चला। रात को 3 बजे यात्रियों की आवाज़ व कोलाहल से मेरी नींद खुली। उठा तो पता चला कि अत्यधिक वर्षा होने के कारण ट्रेन का रूट बदल दिया गया है। ट्रेन रतलाम स्टेशन पर खड़ी थी एवं इसका वैकल्पिक रूट तय किया जा रहा था क्योंकि मैं बहुत थका हुआ था तो मुझे नींद आ गयी सोचा सुबह उठूँगा तो अहमदाबाद आने वाला होगा। यात्रियों के कोलाहल के कारण पुनः मेरी नींद खुली तो पता चला कि अभी तक ट्रेन रतलाम स्टेशन पर ही खड़ी है। फिर पता चला कि अब यह ट्रेन चित्तौड़गढ़-पालनपुर-गांधीनगर के रास्ते अहमदाबाद पहुंचेगी। अब मेरे माथे पर थोड़ी शिकन आई कि अभी भी कम से कम 8 घंटे का रास्ता हमें तय करना था।

सवेरे तकरीबन 10 बजे हम चित्तौड़गढ़ पहुंचे तब जाकर हमें चाय-नाश्ता मिला। सहयात्री से बात करने पर पता चला कि उसे कैसर था और अहमदाबाद के सिविल अस्पताल में सवेरे 10 बजे उन्हें इलाज के लिए भर्ती होना था परन्तु इस समय अस्पताल के बदले वह चित्तौड़गढ़ में फंसे हुए थे। वे बहुत परेशान थे उनकी इस परेशानी को कुछ हल्का करने इच्छा से हमने उन्हें अपने साथ चाय-

नाश्ता करने का आग्रह किया। हमारे बहुत आग्रह करने पर उन्होंने हमारे साथ चाय एवं नाश्ता किया। परिवर्तित रूट के अनुसार 2 बजे हम अजमेर पहुंचे। तकरीबन दो घंटे ट्रेन वहां खड़ी रही। हम इस बात से कतई अनजान थे कि हम कितने बजे घर पहुंचेंगे। इस बीच सहयात्रियों से चर्चा करते करते कई छोटे बड़े स्टेशन आये और हमारी एक्सप्रेस ट्रेन अब लोकल बन चुकी थी।

इसी बीच एक छोटा स्टेशन आया जिसका नाम था "नाना" नाम देख कर मेरे ससुर जी बहुत खुश हुए। बातें करते करते एक सहयात्री ने कहा ट्रेन की हालत देखते हुए हमें रात्रि भोजन का इंतजाम कर लेना चाहिए। यह तय हुआ कि पालनपुर आने पर गुप्ता जी की थाली खायी जाए। गुप्ता जी का नाम शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन के लिए प्रसिद्ध है। हमने उन्हें फ़ोन किया तो उन्होंने आर्डर लेने से यह कहते हुए मना कर दिया कि इस रूट पर यह क्रमांक की ट्रेन आती ही नहीं है। हमारे बहुत अनुरोध करने एवं कई और फ़ोन कॉल आने पर उन्होंने रेल जानकारी चेक की और हमारा आर्डर लिया। तय समय पर उन्होंने ट्रेन की सीट पर खाना पहुंचा दिया।

उज्जैन से धार्मिक यात्रा से लौटी कुछ महिलाओं ने भी हमारे साथ भोजन किया अब हम सभी एक परिवार की तरह हो गए थे। उन चार महिलाओं में से एक महिला ने पूछा आप कहाँ रहते हो क्योंकि उनकी अन्य सहयात्री महिलाएं थोड़ी दूर एअरपोर्ट की तरफ रहती थी। हमने उन्हें आश्वासन दिया कि हम उन्हें सुरक्षित घर पहुंचा देंगे। हम रात को 1 बजे अहमदाबाद स्टेशन पहुंचे, फिर उन महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचा कर तकरीबन 2 बजे घर पहुंचे। हमारी 11 घंटे की यात्रा करीब 32 घंटे में सुखद रूप से पूर्ण हुई। हमारे घरवाले भी हमें सुरक्षित घर पर देख बहुत खुश हुए।

इस यात्रा से कई सारी सीख मिली जैसे ट्रेन में हमेशा कुछ खाने का सामान ले कर ट्रेवल करना चाहिए क्योंकि अनुमानित समय से अधिक समय लग सकता है, सभी सहयात्रियों को परिवार समझ कर उनकी मदद करनी चाहिए।

छुक करती चलती रेल (ज़िंदगी)

बिनय कुमार
लेखापरीक्षक

छुक छुक करती चलती रेल,
प्यारे बच्चों एक दूसरे के साथ बना के मेल...
बालक तेरा अभी बालपन है तू खेल तू खेल ॥

रेल के इस खेल में अपना प्यारा भारत तू घूम ले,
कभी माता-पिता तो कभी अपने इस देश की प्यारी मिट्टी को तू चूम ले ॥
तू घूम ले तू घूम ले...
छुक छुक करती इस रेल से अपना प्यारा भारत घूम ले ॥

रेल के इस खेल में कभी नदियाँ तो कभी झरनों को निहार ले,
कभी दोस्तों के साथ जीत ले तो हार ले,
अपनी खुशियों को आसमान से उतार ले...
तू जी ले तू जी ले...
छुक छुक करती रेल के इस खेल में, अपना पूरा बचपना जी ले,
अपना पूरा बचपना जी ले ॥

रेल से भी लम्बी तू अपनी उड़ान भर,
कभी गिरकर तो कभी उठकर,
छुक छुक के इस खेल में तू कभी ना डर...
तू कर तू कर तू हिम्मत तो कर,
एक दिन पूरी दुनिया तुझे सलाम करेगी उठकर ॥

छुक छुक के इस खेल में तू बस अपना ध्यान रख,
तेरी जीत पक्की होगी तू बस ईमानदारी रख,
रेल (ज़िंदगी) के इस सफ़र में तुझे कई छोटी-मोटी कई कठिनाईयां मिलेंगी,
इससे कुछ सीखकर तू बस अपने हौसलों पर अडिग रह,

तेरी जीत पक्की है तू बस रेल की तरह छुक छुक करते चलते रह, तू बस चलते रह ॥

तुम्हें बहुत आगे जाना है, तुम्हें देश का नाम ऊंचा करना है,
जैसे छुक छुक करती रेल प्रारंभ स्थान से गन्तव्य स्थान तक पहुंचने में करती है ॥
उसी प्रकार छुक-छुक (ज़िंदगी) के इस खेल में तुम्हें खेलना है, तुम्हें जीतना है,
तुम्हें अपना लक्ष्य हासिल करना है, तुम्हें अपना लक्ष्य हासिल करना है ॥

छुक छुक की इस रेस में, बचपने के इस भेष में,
तुम उम्मीद की एक लौ हो,
तुम बस अपना ये प्यारा खेल खेलते जाना,
कभी ना घबराना, कभी ना घबराना ॥



केन्द्रीय विश्वविद्यालय गुजरात, गांधीनगर में ऑडिट आउटरीच कार्यक्रम

तुलसी के पौधों का वितरण

शास्त्रोक्त एवं वैज्ञानिक आंकलन की दृष्टि से तुलसी का पौधा 24 घंटे वातावरण में ऑक्सीजन की आपूर्ति करता है जो वातावरण को शुद्ध बनाये रखने में मदद करता है, क्योंकि यह ही एकमात्र ऐसा पौधा बताया गया है, जो ओजोन छोड़ता है, जो कि सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणों से हमारी रक्षा करता है। इसके महत्त्व को ध्यान में रखते हुए हमारे कार्यालय में पर्यावरण दिवस के अवसर पर कल्याण अनुभाग द्वारा कार्मिकों को तुलसी के पौधों का वितरण किया गया। साथ ही इसके विविध फायदों के बारे में बताया गया जैसे कि तुलसी में गुणकारी एंटीऑक्सीडेन्ट्स होते हैं जो बीमारियों से लड़ने में मदद करते हैं और यह शरीर को विभिन्न रोगों से बचाने में मदद कर सकता है। साथ ही तुलसी में विटामिन 'ए' और 'के' का एक अच्छा स्रोत होता है जिसके साथ ही कैल्शियम और मैग्नीशियम जैसे खनिज भी पाए जाते हैं। तुलसी के सेवन से हृदय स्वास्थ्य को सुधारने में मदद मिल सकती है क्योंकि इसमें हृदय के लिए फायदेमंद गुण होते हैं।



(सी.पी.आर.)

हमारे कार्यालय में सरदार वल्लभभाई पटेल हॉस्पिटल की तरफ से मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ चिकित्सक द्वारा हृदयघात होने की स्थिति में व्यक्ति की किस प्रकार सी.पी.आर.द्वारा उसकी जान बचाई जा सकती है। सी.पी.आर. का अर्थ है कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन । यह एक तरह की प्राथमिक चिकित्सा यानि फर्स्ट एड है। जब किसी पीड़ित को सांस लेने में दिक्कत हो या फिर वो सांस न ले पा रहा हो और बेहोश हो जाए तो सी.पी.आर. से उसकी जान बचाई जा सकती है ।

इसका सही तरीके से प्रयोग करने से व्यक्ति की हृदय गति को बनाए रखने और जीवन को बचाने में मदद मिलती है। यह अक्सर किसी व्यक्ति का जीवन बचाने में अहम कदम साबित होता है। आगे यह भी बताया गया कि सी.पी.आर करने से अस्पताल पहुंचने से पहले कुछ समय के लिए व्यक्ति को सहायता प्राप्त होती है, जिससे उसकी स्थिति स्थिर रहती है और उसकी चिकित्सा की संभावना बढ़ जाती है।



ऑडिट दिवस के अवसर पर आयोजित पदयात्रा के दृश्य





पश्चिम क्षेत्र एवं अंतरक्षेत्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता की झलकियां





सुबह-सुबह बिस्तर पर चाय आ जाने के बाद उठने का अपना ही मज़ा है। सालों से मैं पत्नी के चाय लाने के बाद ही उठता हूँ। पर आज काफ़ी देर हो गई है, खिड़की के बाहर सूरज की तेज़ रोशनी भी लग रही है। “आज ये अभी तक चाय ले कर क्यों नहीं आई” काफी देर तो मैं यही सोचते सोता सा रहा। लेकिन बाहर से कुछ अजीब सी आवाज़ें आ रही थीं जो मुझे सोने नहीं दे रही थीं। फिर सोचा कि देखूँ आखिर माजरा क्या है। उठ कर बाहर देखा तो पाया कि आँगन में भीड़ लगी हुई है, किसी के रोने की आवाज़ भी आ रही है। कुछ और आगे बढ़ा तो देखा मेरी पत्नी एक मृत देह के पास बैठी रो रही है।

अरे ! ये क्या अनहोनी हो गई ! यह किसी की मृत देह रखी है। मुझे सदमा सा लगा, ये क्या हो गया घर में और मैं सोता ही रहा। “लेकिन ये कौन चला गया दुनिया छोड़ के!” यह सोच कर मेरे दिल की घबराहट बढ़ती जा रही थी। जब मैं और आगे बढ़ा तो देख कर अचंभित हो गया कि मृत देह तो मेरी है, मुझे अपने देखे पर विश्वास नहीं हो रहा था फिर मेरे दिमाग में आया कि कल रात कुछ असामान्य सा तो लग रहा था । तो क्या मैं सोते-सोते मर गया? मैंने घबराहट में अपनी पत्नी और बच्चों को आवाज़ लगाई पर उनपर मेरी आवाज़ का कोई असर ही नहीं हुआ जैसे कि उनको मेरी आवाज़ सुनाई ही न पड़ रही हो।

ओहो! मैं तो वाकई मर गया हूँ! मेरा शक यकीन में बदलता जा रहा था, इसके साथ ही मेरा मन हताश होता जा रहा था। अचानक मेरे अंदर से आवाज़ आई. नहीं मैं नहीं मर सकता, मेरे तो अभी काफ़ी ज़रूरी काम बाकी हैं। मुझे अपने बड़े भाई से माफ़ी मांगनी है जिसे मैंने बँटवारे को ले कर बहुत बुरा भला कह दिया था, मैं वह सब कहना नहीं चाहता था बस आवेश में कह गया था।

मेरी पत्नी कब से चार धाम की यात्रा पर जाना चाहती है उसको उस यात्रा पर ले कर जाना है। मैंने तो उसको यह भी नहीं बता रखा है कि मेरा पैसा कहाँ-कहाँ जमा कर रखा है, ऐसे तो वह पराधीन जीवन बिताएगी और मेरा पैसा कोई और

हड़प कर जाएगा। ओहो! मैं कब से अपने बेटे को जीवन की कुछ बातें बताना चाहता था . . . मैं उसको बताना चाहता हूँ वह मेरे लिए कितना महत्वपूर्ण है, मैं भी उसको उसकी माँ की तरह प्यार करता हूँ, बस वह मेहनत करे इसलिए मैं उस से कड़क मिज़ाजी से पेश आता हूँ । वह पैसे की कीमत को समझे इसलिए मैं उसको अधिक पैसे नहीं देता हूँ । वह तो हुमेशा मुझे बहुत ही कंजूस और कड़क पिता मानता रहेगा।

आज मैं अपने परिवार को समझाना चाहता हूँ कि जीवन में भौतिक चीज़ों के पीछे भागने से कोई फायदा नहीं है, आपसी प्रेम और सदभाव उन सब चीज़ों से बहुत महत्वपूर्ण है । लेकिन मैं खुद भौतिक चीज़ों के पीछे भागने के चक्कर में इतना समय ही नहीं निकाल पाया कि उन के साथ बैठ कर बात कर पाता और अब मेरा समय पूरा हो गया ।

मैं इन विचारों से उबर भी नहीं पाया था कि "मैं अभी नहीं मर सकता", तब तक यमदूत मुझे ले जाने के लिए आ गए । मैंने उनको अपनी पूरी व्यथा बताई और उनसे एक सप्ताह की मोहलत मांगी, इतने समय में मैं अपनी पत्नी को चार धाम की यात्रा करवा सकता हूँ, कुछ समय बच्चों के साथ बिता लूँगा और बड़े भाई जिनसे मुझे माफ़ी मांगनी है, उनसे फ़ोन पर माफ़ी मांग लूँगा, पर यमदूतों ने मेरी विनती नहीं मानी। मैं एकदम परेशान हो गया, उनके सामने गिड़गिड़ाने लगा लेकिन उन पर कोई फ़र्क़ न पड़ा तो मैंने उनसे कहा कि मुझे एक सप्ताह न सही एक घंटे का समय ही दे दें, मैं कम से कम अपने प्रियजनों से अंतिम बार बात तो कर लूँ। वे तो मेरी एक सुनने को तैयार नहीं थे । यमदूत मेरा कंधा कस के पकड़ के ले मुझे जाने लगे।

इससे मेरे मन की व्याकुलता बढ़ती जा रही थी और मैं अपने ले जाए जाने का विरोध कर रहा था, पर जितना मैं विरोध करता उनकी पकड़ मेरे कंधे पर और मजबूत होती जाती । इससे मेरे मन की व्याकुलता अपने चरम पर पहुँच गई और अचानक ही मेरा सपना टूटा और मेरी आँख खुल गई।

मेरी पत्नी मेरा कंधा हिला हिला कर मुझे जगा रही थी। वह मेरे लिए चाय लेकर आई थी। उस बुरे सपने से निकाल कर मुझे बहुत तसल्ली हुई। अपनी पत्नी को सामने देख कर मुझे ऐसा लगा जैसे दोबारा जीवन मिल गया हो। चाय पीते-पीते,

मैंने अपनी पत्नी को अपना स्वप्न सुनाया। मैंने उसी दिन अपनी पत्नी के साथ चार धाम की यात्रा की टिकट बुक करवाई। शाम को बड़े भाई के घर गया उनसे माफ़ी मांगी। मेरे ऐसा करने पर उनकी प्रतिक्रिया देख कर मैं दंग रह गया, हमेशा अकड़ में बात करने वाले भैया रुआंसे से हो गए, उन्होंने भी मुझ से माफ़ी मांगी।

उस दिन पहली बार मुझे बड़े भैया में पिता जी की छवि दिखाई दे रही थी। शायद जैसे मैं अपने बेटे से सख्ती का व्यवहार रखता हूँ, वैसे ही भैया मेरे साथ रखते हैं। फिर हम दोनों भाई काफी देर अपने बचपन की बातें कर के प्रसन्न होते रहे। भैया के घर से लौटते समय मेरा मन बहुत ही हल्का लग रहा था, मुझे ऐसा लग रहा था मानो मेरे साथ साथ पूरी दुनिया खुश है, ऐसा लग रहा था जैसे मेरे भैया से बात करने से मेरे स्वर्गवासी पिता जी भी मुझसे संतुष्ट हुए होंगे। ऐकित्वा चलाते हुए हवा ऐसी लग रही थी जैसे मुझे शाबासी दे रही हो, मेरे मन में सोलह साल के लड़के जैसा उत्साह था।

घर पर जब मैंने पत्नी को भैया के घर का सुनाया तो वह भी काफ़ी खुश हुई। उस दिन मैंने भोजन पर बेटे का इंतज़ार किया एवं उसके आने पर हमने साथ में भोजन किया, उस के साथ ही मैंने उसको वो सारी बातें बताई जो मैं उसको बताना चाहता था। उसने मेरी बातों को मेरी उम्मीद से अधिक समझदारी से लिया, उसके मन में मेरे पैसों को ले कर कोई लालच नहीं था।

उस दिन सोते समय मैं यही सोच रहा था कि दुनिया इतनी भी बुरी नहीं है जितनी हम अपने मन से सोच लेते हैं, दिल खोल के बात करने से मन की गाँठ खुल जाती हैं। असली खुशी पैसों में नहीं बल्कि अपनेपन में होती है। हम जब गुस्से में होते हैं तो बुरी से बुरी बात भी तुरंत कह देते हैं। परंतु अगर कुछ बढ़िया बात कहनी हो तो उचित समय का इंतज़ार करते रहते हैं। और ये उचित समय कभी आता ही नहीं है।

अपनों से जो कहना है, उनके लिए जो करना है, वह जब मन में आए कर देना चाहिए, आगे पता नहीं कब परिस्थिति बदल जाये। आज के पूरे घटनाक्रम के बाद मेरे मन में आ रहा था काश ये स्वप्न मुझे कुछ सालों पहले आ गया होता तो जीवन कितना अलग बीता होता।

जब मुझे 23 वर्ष पहले (जनवरी 2000 में) गुजरात महालेखाकार कार्यालय से नियुक्ति का प्रस्ताव मिला था तब मुझे यकीन नहीं था कि मेरा सफर यहाँ तक रहेगा, क्योंकि मेरे पिताजी ने कहा था वे मुझे इतनी दूर नहीं भेजेंगे और अपने राज्य में ही कोई न कोई सरकारी नौकरी मिल जाएगी। तब तक मैं दो बार बैंकिंग का इंटरव्यू अटैंड कर चुका था।

नियुक्ति का प्रस्ताव मिलने पर मुझे अत्यंत खुशी हुई हालांकि मैं कभी माता-पिता को छोड़कर बाहर नहीं रहा और नहीं रह सकता था। मगर स्थिति बदली। हर रोज़ मेरे घर पर अड़ोस-पड़ोस के लोग, मेरे दोस्त, मेरे भाई के दोस्त और मेरा पिताजी के दोस्तों की कतार लगी थी। सब लोग प्रेम से डाँट कर कहते थे "आज कल सरकारी नौकरी मिलना बहुत कठिन है और तुम केंद्र सरकार की नौकरी छोड़ रहे हो"। हर रोज़ शुभचिंतकों का आना मेरे लिए थोड़ा सा असुविधाजनक था।

इस दौरान इस कार्यालय से तार के माध्यम से अंतिम चेतावनी मिली कि आप को 4 अप्रैल 2000 तक आना पड़ेगा अन्यथा आपकी नियुक्ति रद्द कर दी जायगी। आखिरकार मैंने पिताजी को मनाया कि हम गुजरात जाएंगे, पसंद आया तो रहूँगा नहीं तो वापिस आ जाऊँगा। मैं पिताजी को लेकर बिना आरक्षण रेल गाड़ी में पहली बार अहमदाबाद पहुंच गया। तब कार्यालय में मुझे कुछ तेलुगु भाषी कुछ सहकर्मचारी मिले थे। उस दिन शाम को हम दोनों उनके साथ शाहआलम स्थित स्टाफ क्वार्टर्स गये। उस समय पर वे सभी लोग अविवाहित थे।

दूसरे दिन मैंने पिताजी को गाँव वापस भेज दिया था। मैं रोज़ सुबह क्वार्टर्स के पास मैसूर कैफ़े में नाश्ता करके कार्यालय पहुंचता था। दोपहर का खाना कार्यालय के जलपान-गृह में करता था। मैं तो एक दम मिर्ची वाला खाना खानेवाला व्यक्ति था और यहाँ तो मीठा मिश्रण करके खाना मिलता था, फिर भी चलता था। रात के खाने की एक प्रणाली मेरे दोस्तों के बीच में क्वार्टर्स में चलती

थी। उन में से एक दोस्त के घर पर खाना बनता था और बाकी सब लोग वहीं पर खाना खाते थे। जो भी खर्च होता था सभी लोग समान रूप से सहयोग करते थे।

हर रोज शाम को कार्यालय से आने के बाद हम उनके घर जाते थे और उनकी खाना बनाने में मदद करते थे। मुझे बहुत ही अच्छा लगता था कि उस दोस्त की वजह से घर जैसा खाना मिल रहा था। कम से कम एक समय अपने स्वाद का खाना मिलता था। इस से घर की याद से राहत मिलती थी और समय व्यतीत होता था।

कुछ दिन ऐसे रहने के बाद मुझे लगा कि मुझे तो थोड़ा बहुत खाना बनाना आता है, क्यों मैं अपना खाना खुद नहीं बना सकता हूँ? मैंने यह प्रस्ताव मेरे एक नज़दीकी दोस्त के सामने रखा क्योंकि उन के पास बर्तन और गैस-चूल्हा था। उन्होंने हाँ कहा और हम दोनो ने उनके घर पर खाना बनाना शुरू कर दिया।

बाद में हम लोग मेघाणीनगर रहने चले गए। वहाँ जाने के बाद धीरे-धीरे सब लोगों की शादियाँ होने लगीं और मैं अकेला रहने लगा। मेरी यहाँ सात साल बैचलर लाइफ थी। खाना बनाना सीखने से फ़ायदा हुआ। इसीलिए कहते हैं कि "जो कुछ भी होता है वो अच्छे के लिए ही होता है।"

शुरुआत में मुझे घर की याद ज़रूर आती थी। मैं बीच-बीच में मौका ढूँढ कर गाँव जाता था। इसी तरह पहले दो वर्ष मुझे पता ही नहीं चला कैसे गुजर गये। बाद में समय बदला और धीरे-धीरे यहाँ रहने की आदत हो गई और अच्छा लगने लगा। केवल गाँव आने जाने के लिए दूरी ज्यादा लगती थी, बाक़ी सब अच्छा लगता था। शुरुआत में एक ऐसी आशा थी कि एकतरफ़ा स्थानान्तरण पर लगा हुआ प्रतिबंध हटेगा और अपने राज्य में चले जाएँगे, पर अब रहते-रहते यहाँ रहने की आदत हो गयी है। अब प्रतिबंध हटता है, नहीं हटता है मुझे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

दूसरे राज्य में नहीं जाने से शुरू होकर दूसरे राज्य में बसने तक मेरा सफर चला और आगे भी चलेगा। देखते-देखते 23 साल गुज़र गए। यही है "प्रारब्ध/भाग्य/नियति"। इसलिए "डेस्टिनी" पर विश्वास करें।

क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि किसी व्यक्ति से बात करते समय उत्तर प्रत्युत्तर देने के सिलसिले के चलते बातचीत मुख्य मुद्दे और उद्देश्य से एकदम हट कर किसी अन्य ही दिशा में चली गई हो? किसी भी बातचीत में जब ध्यान सामने वाले की बात सुन कर समझने के बजाय उसकी बातों का उत्तर देने पर केन्द्रित हो तो इस प्रकार की परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। इस बात का विश्वास होना कि सामने वाला व्यक्ति आपकी बात को बिना किसी पूर्वाग्रह के सुनेगा और अवश्य समझेगा, बातचीत को सहज और सुगम बनाता है।

बातचीत के कई प्रकारों के बारे में हम लोग सुनते-पढ़ते आए हैं। शब्द कोष के अनुसार बातचीत का अर्थ है दो या दो से अधिक व्यक्तियों में परस्पर होने वाली औपचारिक या अनौपचारिक, मौखिक या लिखित बातें जिनके माध्यम से विचारों, भावनाओं को व्यक्त किया जाता है, प्रश्न पूछे जाते हैं और उत्तर दिये जाते हैं और समाचारों अथवा सूचना का आदान-प्रदान किया जाता है।

बातचीत का उद्देश्य सामान्यतया मैत्रीपूर्ण और खुले तरीके से जानकारी, राय और विचारों को साझा करना होता है। बातचीत के अनेक प्रकार हैं जैसे संवाद, बहस या वाद विवाद, भाषण, अभियोगात्मक भाषण या निंदा इत्यादि। इनमें से हर प्रकार की बातचीत का विशिष्ट परिस्थितियों के अनुसार प्रयोग किया जाता है।

संवाद बातचीत का वह रूप है जिसमें दो या दो से अधिक लोगों के बीच विचारों और मतों का आदान-प्रदान होता है। संवाद का लक्ष्य अलग अलग दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्तियों के बीच मतैक्य स्थापित करना, उनके बीच की दूरी को पाटना और आपसी समझ विकसित करना है।

वाद-विवाद या बहस दो विरोधी पक्षों के बीच किसी विशिष्ट विषय पर होने वाली औपचारिक चर्चा है जिसका उद्देश्य जटिल मुद्दों का विश्लेषण करना विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हुए उनकी परस्पर तुलना करना तथा अंततः सामने

वाले पक्ष और दर्शकों को एक निश्चित दृष्टिकोण अपनाने के लिए राज़ी करना होता है। बहस का स्वर अक्सर तर्कपूर्ण और प्रतिस्पर्धी होता है।

भाषण विचारों का एक औपचारिक और संरचित आदान-प्रदान है। भाषण का स्वर अक्सर वस्तुनिष्ठ और विश्लेषणात्मक होता है तथा इसमें वक्ता अपने तर्कों का समर्थन करने के लिए साक्ष्य और तर्क का उपयोग कर सकते हैं। अक्सर इसका प्रयोग गहरी समझ विकसित करने के उद्देश्य से जटिल मुद्दों, विचारों या ग्रंथों का विश्लेषण और व्याख्या करने में किया जाता है।

अभियोगात्मक भाषण या निंदा किसी व्यक्ति या किसी चीज़ पर एक कठोर और कड़वा मौखिक हमला है जो रचनात्मक संवाद के बजाय आलोचना और दोषारोपण पर केंद्रित है। अभियोगात्मक भाषण का स्वर अक्सर भावनात्मक और भड़काऊ होता है जिसमें वक्ता अपने क्रोध या हताशा को व्यक्त करने के लिए अपमान और व्यक्तिगत हमलों का उपयोग कर सकता है। इसका उद्देश्य अक्सर किसी विशेष स्थिति, व्यक्ति या समूह के प्रति निराशा, क्रोध या असंतोष को प्रकट करना होता है। अभियोगात्मक भाषण विभाजनकारी और धुवीकरण करने वाला हो सकता है और व्यक्तियों या समूहों के बीच समझ और सहयोग बनाने में बाधक है।

संक्षेप में कहें तो बातचीत के इन विभिन्न प्रकारों में, संवाद का उद्देश्य आपसी समझ को विकसित करना है, वाद-विवाद या बहस का उद्देश्य किसी तर्क को जीतना है, भाषण का उद्देश्य विचारों या ग्रंथों का विश्लेषण और व्याख्या करना है तथा अभियोगात्मक भाषण का उद्देश्य आलोचना करना और दोषारोपण करना है। बातचीत के प्रत्येक रूप का स्वर और दृष्टिकोण संदर्भ और उद्देश्य के आधार पर भिन्न होता है।

व्यक्तिगत संबंधों के सन्दर्भ में बातचीत का सबसे लोकतांत्रिक और प्रभावकारी माध्यम संवाद है। संवाद शब्द दो शब्दों से मिल कर बना है सम और वाद, सम अर्थात् समानता और वाद का अर्थ होता है कहना या बोलना। इसलिए संवाद का शाब्दिक अर्थ हुआ समान रूप से विचारों का आदान-प्रदान। संवाद में प्रत्येक प्रतिभागी को अपने विचारों और दृष्टिकोण को साझा करने का समान अवसर मिलता है। इसका लक्ष्य एक आपसी समझ या समझौते तक पहुंचना है। एक

प्रभावी संवाद के लिए सभी पक्षों का सक्रिय रूप से सुनना, विभिन्न दृष्टिकोणों के प्रति सम्मान रखना और पूर्वाग्रहों को छोड़ कर खुले दिमाग से सोचना अनिवार्य है।

एक संवाद में, सभी प्रतिभागियों के पास बातचीत में योगदान करने का समान अवसर होता है, और बातचीत में किसी एक व्यक्ति का वर्चस्व नहीं होता। प्रत्येक प्रतिभागी के पास सम्मानजनक और सहयोगपूर्ण तरीके से बोलने, सुनने और दूसरों को जवाब देने का अवसर होता है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि सभी आवाज़ें सुनी जाएं और कोई भी व्यक्ति हाशिए पर न हो या बातचीत से बाहर न हो।

व्यक्तिगत संबंधों, जैसे दोस्ती, रोमांटिक रिश्तों या पारिवारिक रिश्तों में, स्वस्थ संबंधों को समझने और बढ़ावा देने के लिए संवाद एक प्रभावकारी साधन हो सकता है। संवाद समस्याओं को हल करने, संघर्षों को कम करने, विश्वास बनाने और बढ़ाने और व्यक्तियों को अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक सुरक्षित माध्यम प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। एक लोकतांत्रिक संवाद में, सभी प्रतिभागियों को भाग लेने और सुनने का समान अवसर मिलता है, जो व्यक्तियों के बीच विश्वास, सम्मान और आपसी सूझ-बूझ बनाने में बहुत मदद करता है।

वहीं दूसरी ओर, जब संवाद का केंद्र बिंदु एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझने के बजाय अपना दृष्टिकोण दूसरों पर थोपना हो जाये तो संवाद को बहस में तब्दील होने में देर नहीं लगती।

एक संवाद में, ध्यान सुनने और समझने पर होता है, जबकि एक बहस में, ध्यान बोलने और समझाने पर होता है।

संवाद बहस में परिवर्तित हो सकता है यदि प्रतिभागी रक्षात्मक हो जाएँ और दूसरों को सुने बिना या विभिन्न दृष्टिकोणों को स्वीकार किए बिना अपनी बात मनवाने का हठ करना शुरू कर दें। ऐसा होने के दो मुख्य कारण होते हैं या तो प्रतिभागी स्वयं के विचारों के प्रति भावनात्मक रूप से अत्यधिक आसक्त होते हैं या सामने वाले पक्ष के विचारों के लिए उनके मन में सम्मान नहीं होता। कुछ

परिस्थितियों में ये दोनों ही कारण मौजूद होते हैं और परिणामस्वरूप संवाद बहुत ही कटु बहस में परिवर्तित हो जाता है।

एक और कारक है जो संवाद को तर्क-वितर्क की ओर ले जा सकता है वो है शक्ति असंतुलन। जिस प्रकार हम व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में किसी संस्था में पॉवर डायनैमिक्स की बात करते हैं, उसी प्रकार व्यक्तिगत संबंधों में भी पॉवर डायनैमिक्स की बहुत अहम् भूमिका होती है। यदि दोनों में से एक व्यक्ति किसी भी कारणवश (आयु, शिक्षा, प्रतिष्ठा, आर्थिक सम्पन्नता इत्यादि) अधिक अधिकार या प्रभाव रखता है तो शक्ति असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होती है। जब एक व्यक्ति के पास दूसरे की तुलना में अधिक अधिकार या प्रभाव होता है, तो तर्क-वितर्क हो सकता है।

बहस में जहाँ प्रतिभागी विभिन्न तर्क और साक्ष्य देते हुए अपने दृष्टिकोण को उचित और सामने वाले पक्ष के दृष्टिकोण को अनुचित ठहराने का प्रयास करते हैं, वहीं संवाद में इन रणनीतियों के लिए कोई स्थान नहीं होता। बातचीत में अपना वर्चस्व स्थापित करने के बजाय संवाद में अलग-अलग दृष्टिकोणों को समझने का प्रयास किया जाता है और सामने वाले पक्ष के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रवैया अपनाने की चेष्टा की जाती है।

सारांश में, एक संवाद एक बहस में परिवर्तित हो सकता है जब बातचीत अलग-अलग दृष्टिकोणों की खोज करने और एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने के बजाय दूसरों को एक विशेष दृष्टिकोण अपनाने के लिए राज़ी करने पर केंद्रित हो जाती है।

किसी संवाद को बहस में बदलने से रोकने के लिए आवश्यक है सक्रिय रूप शांति पूर्वक सुनना, रक्षात्मक न होना, अपनी प्रतिक्रिया देने से पहले वक्ता की पूरी बात को सही परिपेक्ष्य में सुनना ।

यदि कोई बात समझ न आये तो स्पष्टीकरण मांगने और यदि आप वक्ता हैं तो पूछे जाने पर स्पष्टीकरण देने से गलतफहमियां पनपने नहीं पातीं और बातचीत सही दिशा में जारी रह पाती है।

दूसरे व्यक्ति के विचारों से असहमत होने के बावजूद सम्मानपूर्वक व्यवहार बनाये रखना एक सफल संवाद के लिए बहुत ज़रूरी है। दरअसल लोगों की अलग-अलग पृष्ठभूमि, अनुभव और विश्वास होते हैं जिनके कारण किसी मुद्दे पर उनके अलग-अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं। क्रोध,हताशा,भय,असुरक्षा जैसी प्रबल भावनाएँ भी लोगों को रक्षात्मक या प्रतिक्रियाशील बना सकती हैं, जिससे तर्क-वितर्क हो सकते हैं। यदि बातचीत कटु या अनुत्पादक हो जाती है, तो इसे समाप्त करना और बाद में फिर से प्रयास करना ही ठीक रहता है।

अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते समय स्पष्ट और संक्षिप्त रहने से गलतफहमियां पैदा होने की संभावना कम होती है। कभी-कभी हम अपनी कुछ धारणाएं बना लेते हैं और ऐसा मानने लगते हैं कि हमें ज्ञात है कि दूसरा व्यक्ति क्या सोच रहा है या महसूस कर रहा है। इस प्रकार की धारणाएं बनाने से हम कभी तटस्थ भाव से दूसरे व्यक्ति की बात नहीं समझ पाते और उसकी प्रत्येक बात और कार्य की व्याख्या निष्पक्षता से नहीं कर पाते।

संवाद के दौरान हमेशा विषय पर केंद्रित रहने और असंबंधित मुद्दों से विचलित होने से बचने के लिए दो बातें हमेशा ज़हन में रखें। पहली यह कि संवाद का क्या उद्देश्य है और दूसरी यह कि इससे हम क्या हासिल करने की उम्मीद करते हैं। इसके अतिरिक्त वर्तमान मुद्दे पर टिके रहने और अप्रासंगिक मुद्दों के कारण संवाद को किसी अलग दिशा में ले जाने से बचने के लिए आवश्यक है कि पिछली शिकायतों का ज़िक्र इस दौरान न किया जाए।

इन बातों का ध्यान रखने से यह सुनिश्चित करने में कुछ हद तक मदद मिल सकती है कि संवाद प्रभावी हो और सार्थक परिणाम की ओर ले जाये। परन्तु सच यह है कि यदि दो व्यक्तियों के बीच भावनात्मक जुड़ाव (इमोशनल कनेक्ट) हो तो कई बार संवाद के लिए शब्दों की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। एक नवजात शिशु का अपनी मां से शब्दहीन संवाद इसका सबसे अनूठा उदाहरण है।

कई बार कुछ लोगों के स्नेह और आश्वासन भरे दो शब्द भी बहुत कुछ कह जाते हैं और कई बार हजारों शब्दों में भी हम अपनी बात सामने वाले व्यक्ति तक पहुँचने में विफल रहते हैं। जहाँ एक ओर कुछ रिश्तों में संवादहीनता के बावजूद प्रेम, विश्वास और आश्वासन अक्षुण्ण रहते हैं, वहीं कुछ रिश्तों में तमाम तरह के

मौखिक,लिखित आश्वासनों के बाद भी असुरक्षा और अविश्वास बने रहते हैं। रिश्तों में संवाद से विवाद की ओर जाने का सफ़र बहुत कष्टकारक होता है और इस सफ़र के अंत में दोनों ही पक्ष रीते हाथ ही रहते हैं। यह निर्णय हमें ही करना होता है कि हमें वाक्युद्ध जीतना है या अपने रिश्तों को सहेजना है। संवाद को विवाद तक ले जाकर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने या अपनी बात को अनेक तर्क वितर्क दे कर सही साबित करने से कहीं बेहतर होता है। प्रभावी संवाद से या आवश्यकता पड़ने पर संवादहीनता से सार्थक परिणामों को प्राप्त करना।

किसी ने बहुत खूब कहा है कि मौन रहना एक साधना है और सोच समझ कर बोलना एक कला।



ऑडिट दिवस के अवसर पर लेखा कार्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम

कुछ दिन पहले की बात है। खाना खाते समय पापड़ खाने का मन कभी हो ही जाता है, मेरा भी हुआ। मैं अचानक ही बोल पड़ा, कितना अच्छा हो यदि पापड़ सिंका हुआ मिल जाए! (दो छोटे बच्चों वाले एकल परिवार में धर्मपत्नी यदि गरम खाना पूरे परिवार के लिए दोनों समय बना पाए तो उसके बाद शायद ही किसी भी पति की फरमाइश की कोई गुंजाइश रह जाती है। अगर आप इस बात से ताल्लुक नहीं रखते तो यकीन मानिए आप बहुत ही ज्यादा नसीबदार हैं)। मैं भी बरबस बोल ही पड़ा था और मन ही मन हालात सामान्य रहें, ये प्रार्थना भी कर रहा था। खुशकिस्मती से श्रीमती जी का ध्यान छोटी वाली बिटिया को खाना खिलाने में था या उनका ध्यान मेरी फरमाइश पर नहीं गया होगा, जो भी हो बस...

आरवी, मेरी बड़ी बिटिया जो कि 9 वर्ष की है, तुरंत ही बोली, मैं सेंक लाऊं पापा! मैं कुछ बोलता उससे पहले तो उसने रसोई की ओर दौड़ लगा दी। उधर उसका रसोई में कुछ खटर-पटर चालू हुआ इधर उसकी मम्मी की बातों का ! वो बोलती ही रह गई कि अरे तू हाथ मत जला लेना... इसके आगे ज्यादा कुछ मुझे भी याद नहीं रहा क्योंकि मैं भी अपनी खुद की पुरानी यादों में खो गया था। पापा भी शायद ऐसे ही एक दिन सिके हुए पापड़ की फरमाइश कर बैठे होंगे। उस दिन मैं दौड़ कर रसोई में गया था पापड़ सेंक कर लाने के लिए।

मुझे भी ऐसे हर मौके पर बड़ा मज़ा आता था जब पापा मुझे रसोई से जुड़ा कोई काम बताते थे। होता यूं था कि, कुछ भी काम करने पर शाबाशी और कभी कुछ तोहफे मिलने की संभावना भी बढ़ जाती थी। खैर, मैं गया रसोई में, गैस चूल्हा लाइटर से जलाया और पापड़ को हाथ से पकड़ा और लगा पापड़ सेंकने। कभी हाथ जलता, कभी पापड़ और फिर तो हद ही हो गई पापड़ ने आग पकड़ ली और उंगली ने थोड़ी सी आंच। वो पापड़ तो खाने लायक भी नहीं रह गया था तो चुपके से डस्टबिन में फेंक दिया। पापा के सामने शेर बनने की कोशिश को असफल भी नहीं होने दे सकता था। तभी वहीं रखा चिमटा दिखा और मम्मी का चिमटा काम में लेना याद आया। अबकी बार चिमटे ने कुछ लाज रख ली थी और

गैस चूल्हे की आग की लपटों में आधे से कम ही पापड़ जल पाया था, हालांकि बाकी बचा पापड़ जगह जगह से पता नहीं काला क्यूं पड़ गया था। खैर, पापा को चूंकि पापड़ का कुछ हिस्सा तो सिका हुआ मिला तो वो तो उसी में खुश हो गए और थोड़ा ज्ञान भी दिया कि गैस चूल्हे की आंच को थोड़ा धीमा कर लेते वगैरह-वगैरह।

मज़े की बात ये थी की मम्मी वहां से कहीं और जा चुकी थीं तो मैंने बस पापा की सारी बातें सुनी ओर पापड़ कैसे सेंकते हैं का मेरा ज्ञान वहीं सिमट कर रह गया। वक्रत बीतता गया और मैंने कई बार पापड़ सेंके, हालांकि मेरे सीखे हुए तरीके से लाख प्रयास के बावजूद कभी भी 80-85 प्रतिशत से ज्यादा पापड़ खाने लायक नहीं रह पाता था। इस बीच कई बार ऐसे पापड़ सिके हुए देखे जो शत-प्रतिशत अच्छे सिके थे और बिलकुल भी बिना जले हुए थे। मुझे लगता था, ओ माय गॉड, ये तो भाई सच में पापड़ सेंकने के एक्सपर्ट लोग हैं!

मैं अब सिके हुए पापड़ का इंतज़ार कर रहा था और सोच कर मुस्कुरा रहा था कि आज अब मेरी बारी है बिटिया को पापड़ सेंकने का ज्ञान देने की। खैर, इतनी देर में बिटिया रानी दो पापड़ सेंक लाई। मैं भी बस ज्ञान देने को आतुर हुआ पर पापड़ देखते ही मेरा ज्ञान देने को आतुर मुंह खुला का खुला रह गया। ये तो वो ही शत प्रतिशत अच्छे सिके हुए पापड़ जैसा था। मैं कभी पापड़ को, कभी बिटिया को, कभी बिटिया की मम्मी को (पर उसका ध्यान इन सब पर कहां वो तो छोटी को संभालने में ही लगी हुई थी) देख रहा था।

मैं बस बिटिया से ये ज्ञान ले पाया कि बिटिया ये सब कैसे। तुमने तो आज से पहले कभी पापड़ नहीं सेंक। वो बस इतना बोली, इसमें क्या है पापा, गैस चूल्हा लाइटर से जलाया, तवा गरम किया और चिमटे से सेका। और ये सब अभी यूट्यूब से देख कर कर लिया।

मैं बस इतना सोच पाया कि यूट्यूब तो मैं भी इतना देखता हूं फिर मुझे कभी ऐसा आइडिया क्यों नहीं आया! उस दिन सोशल मीडिया पर कहीं पढ़ी लाइन याद आई कि हम उस पीढ़ी के लोग हैं जिन्होंने अपने मां पिताजी से भी ज्ञान लिया और अपने बच्चों से भी ज्ञान ले रहे हैं!!!

वीर कुँवर को कैसे भूलें हम बिहार के वासी
जिसने अस्सी साल में थे गोरों की होश उड़ा दिये
नहीं झुके थोड़ा सा भी वे अंग्रेजों की शक्ति से
बंधे रहे वे मातृभूमि की ऐसी आसक्ति से।
अंग्रेजों की नींद छिन गई थी हुंकार से उनके
सारे ही हैरान थे उनकी पौरुष गाथा सुनके
एक बार नौका से गंगा पार कर रहे थे वे
अंग्रेजों ने घेर लिया तब स्वर्णिम मौका पा के।
इस प्रकार छल से थी अंग्रेजों ने गोली मारी
उन गोरों की निर्लज्जता की ऐसी थी तैयारी
एक बांह में लगी थी गोली जिसको काट दिया था
गंगा माँ को यह तन वीर कुँवर ने भेट किया था।
ऐसे स्वाभिमान के रक्षक थे वे वीर, बिहारी
मातृभूमि के एकनिष्ठ थे वे अतिदिव्य पुजारी
हम सब उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण यह कर लें
तन, मन से निज राष्ट्र की सेवा का व्रत खुद में भर लें।

संतुलन की सार्थकता

रोशन कुमार मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संतुलन, जैसा की शब्द से ही परिभाषित है, यह दो शब्दों से मिलकर बना है, सम्+तुलन, अर्थात् एक तुला के दोनों पलड़े जो बिल्कुल समान हो ना एक कम ना एक ज्यादा हालाँकि यह एक आदर्श स्थिति है। परंतु एक स्तर तक इसको आँका जा सकता है। हमारी संपूर्ण सृष्टि इसी संतुलन पर टिकी है। कदाचित ही ऐसी कोई वस्तु हो जो बिना किसी संतुलन के अनवरत चली आ रही हो। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी प्रमाणित है जैसे कि ग्रह जो सूर्य कि परिक्रमा कर रहे हैं। एक तरफ केंद्र कि तरफ लगने वाला अभिकेंद्रीय बल जो ग्रहों को केंद्र की ओर आकर्षित करता है वहीं ग्रहों पर विपरीत दिशा में लगने वाला अपकेंद्रीय बल न्यूटन का क्रिया-प्रतिक्रिया का नियम इत्यादि ये कहीं नया कहीं इसी संतुलन की ओर इंगित होते हैं।

प्रकृति में सभी जीव-जंतु, पेड़-पौधे, वनस्पति, जल, पर्वत आदि सब संतुलित हैं। जब कभी इस संतुलन में विचलन होता है तो प्रकृति की प्रवृत्ति भी इसी संतुलन की ओर उन्मुख होती है। इसके परिणाम कभी साधारण होते हैं कभी अति भयावह जैसे बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, महामारी इत्यादि।

हमारे दैनिक जीवन में भी इस संतुलन का बहुत महत्व है। हम चलते हैं; उसके लिए भी हमारे कदमों की चाल का आपस में सामंजस्य आवश्यक है। यह संतुलन हमारे मानसिक व शारीरिक रूप को गढ़ने में महत्वपूर्ण कारक सिद्ध होता है। साधारण शब्दों में कहें तो जीवन ऐसा हो जिसमें रिश्तों, कार्य, भावनात्मक कल्याण एवं शारीरिक स्वास्थ्य के बीच परस्पर सामंजस्य बना रहे।

इस आधुनिक युग में रहते हुए लोगों ने खुद को काम आँकने की नकारात्मक प्रवृत्ति विकसित कर ली है। वास्तव में बहुत से लोग इस बात से अनजान हैं कि संतुलित जीवन की वास्तविक परिभाषा क्या है? कार्य-जीवन संतुलन आधुनिक मनुष्य के सबसे बड़े संघर्षों में से एक है।

जो कामकाजी व्यक्ति अपने कार्य में इतने उलझे रहते हैं कि उन्हें समीप बैठा सगा-संबंधी, मित्र, शुभचिंतक दर्शित नहीं होता। इस प्रकार के लोग अधिकांशतः तनाव, चिंता, चिड़चिड़ापन, अवसाद आदि के शिकार होते हैं। तुला के एक पलड़े को इतना भी न खींचा जाए कि दूसरा हमसे दूर होता रहे या टूटकर अलग हो जाए। इसलिए आवश्यक है कि अपनी कामकाजी दिनचर्या एवं मैत्रीपूर्ण संबंधों के बीच संतुलन बनाए रखना चाहे कितनी भी तनावपूर्ण स्थिति हो हमें स्वयं को मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ रखना बहुत जरूरी है।

इस प्रकार संतुलन के विभिन्न आयाम हैं। कुछ हमें ज्ञात होते हैं व कुछ से हम अनभिज्ञ बने रहते हैं। स्मरण रहे कि जिन्हे संतुलन की समझ नहीं है वह निर्जीव है, जड़ है। वह कोई भी आकार में रहता है परंतु प्रकृति के थपेड़े उसको भी एक निश्चित आकार दे देते हैं। परंतु एक जीव जिसकी जीवन यात्रा रूपी नौका संसार के असंतुलित सागर पर सवार रहती है। उसे तो स्वयं ही इस संतुलन की बुनियाद को मजबूत करना पड़ता है। इसी में ही जीवन की सार्थकता निहित है। यही प्रसन्नता की कुंजी है।



रंगोली प्रतियोगिता की एक झलक

बबूल: साहस की परिसीमा

लोकेश कुमार मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

"बबूल" साहस की परिसीमा

"बबूल"

इस बंजर में कौन खड़ा है ?

देख रहा हूँ मौन खड़ा है ?

हवा चले तो आहट नहीं है ।

पानी की भी चाहत नहीं है ।

कड़ी धूप से पात झड़ा है ।

इस बंजर में कौन खड़ा है ?

सूखा सा सही पर छाया है ।

चिड़ियाँ ने आसरा पाया है ।

बिना सींचे ही हुआ बड़ा है ।

इस बंजर में कौन खड़ा है ?

आक खीप का लिये सहारा ।

उसने खुद के तन को संभारा ।

साहस देखो तनकर अड़ा है ।

इस बंजर में कौन खड़ा है ?

भेड़ बकरियां सबने चबाया ।

इसने फिर भी धर्म निभाया ॥

चिड़ियाँ के लिये बाजों से लड़ा है ।

इस बंजर में कौन खड़ा है ?

हवा आंधी चुपचाप सहे सब ।

लू के थपेड़े किससे कहे अब ॥

सौभाग्य जिनके सूल गड़ा है ।
इस बंजर में कौन खड़ा है ?

सूल बताता रहना कैसे ?
इस दुनियां को सहना कैसे ?
अधिकारों की जंग लड़ा है ।
जहां बंजर वो वहीं खड़ा है ॥

खुद को कैसे ढाला मैंने ।
खुद को खुद ही पाला मैंने ॥
खुद का खुद पर पहरा कड़ा हूँ ।
इस बंजर में मैं बबूल खड़ा हूँ ?



केन्द्रीय विश्वविद्यालय गुजरात, गांधीनगर में ऑडिट आउटरीच कार्यक्रम

मेरी प्यारी माँ

विद्या वी. अय्यर
पर्यवेक्षक

माँ तू मेरा पहला प्यार है ।
तू ही मेरी ज़िंदगी का आधार है ।
तेरे पाँव के नीचे जन्नत है मेरी
हूँ मैं माँ की प्यारी प्यारी दुलारी

मेरी प्यारी माँ

माँ के लिए सबसे ज़्यादा अनमोल बच्चों की मुस्कान है ।
माँ की ममता स्वर्ग का अमृत है ।
माँ तू तो ममता की मूर्ति तेरे प्यार में है बड़ी खूबसरती

मेरी प्यारी माँ

हर रिश्ते में मिलावट मैंने देखी
पर तेरी ममता में मिलावट नहीं देखी
ओ माँ , मैं तेरे साथ हूँ सदा, तू मेरे साथ है सदा
तू मेरा आशियाना है तू मेरा प्यार है

मेरी प्यारी माँ

माँ आसमान की तरह हमेशा हमारे साथ होती है ।
माँ अपने बच्चों के सुख में अपना सुख खोज लेती है ।
ओ माँ, तू मेरा संस्कार है ।
तू मेरा सब कुछ है प्यारी माँ

मेरी प्यारी माँ

चित्त के परिणामों को भाव कहा गया है। प्रत्येक मनुष्य के अंतःकरण में प्रति क्षण भाव उठते रहते हैं। किसी भी मनुष्य के व्यक्तित्व में भाव की महत्ता सर्वाधिक है। यह माना जाता है कि जो मनुष्य जैसे भाव करता है उसकी करनी में वह उसी प्रकार से कार्यान्वित होता है। हमारा लक्ष्य हमेशा शुद्ध भाव होना चाहिए अर्थात् हमारे विचारों में किसी भी तरह की कलुषता/ विकृति नहीं होनी चाहिए। कषाय रहित शुद्ध भावों को अपनाकर हम असीम आनंद की प्राप्ति कर पाएंगे तथा अपना व समाज का कल्याण कर पाएंगे।

मन की एकाग्रता अर्थात् किसी भी एक विषय पर चिंतन को केन्द्रित करना ही ध्यान है। ध्यान एक प्रकार का तप है; साधना है। चित्त व इंद्रियों को केन्द्रित कर, समायोजित करने का सामर्थ्य है; लक्ष्य प्राप्ति का साधन है; और लक्ष्य तक पहुँचने की शक्ति है। ध्यान हितकारी हो सकता है और अहितकारी भी अर्थात् जिस ध्यान से विचारों की पवित्रता, चित्त की निर्मलता, करुणा व मैत्री के भाव तथा मन की शांति मिले वह हितकारी ध्यान है तथा जिस ध्यान से आत्मा में द्वेष यथा क्रोध, लोभ इत्यादि उत्पन्न हो वह अहितकारी ध्यान है।

सभी धर्मों व प्रबुद्ध विचारकों के अनुसार किसी भी मनुष्य को 'आत्म-बोध' होना ही उसके जीवन के वास्तविक उद्देश्यों को जन्म देता है तथा उसकी खुशियों के लिए अत्यावश्यक है। पुस्तकें ना पढ़ पाना, निरक्षर होना अथवा देश दुनिया के बारे में न जानना अज्ञानता नहीं है; अज्ञानता है स्व के एहसासों को, लक्ष्यों को, अनुभूतियों को ना समझना, अनुभवों से ना सीखना, मन की गतिविधियों को ना जानना तथा एक परिकल्पित वातावरण में अपने आपको संजोये रखना।

जब तक हम अपने आप को नहीं जानेंगे तब तक, हम हमेशा अशांत तथा दुखी रहेंगे। 'आत्म-बोध' हमें कोई दूसरा प्रदान नहीं कर सकता, ना ही किसी किताब में

इसका फ़ॉर्मूला है। हमारे निजी अनुभव, आस-पास के प्रकरणों से अनुभूति तथा अपने विचारों को केन्द्रित कर उनके बारे में सोचने, गहन मनन व चिंतन से ही 'आत्म-बोध' की प्राप्ति हो सकती है।

जब हम किसी घटना, मनुष्य, पदार्थ अथवा स्थिति को साम्य भाव से, बिना किसी कल्पना या राग-द्वेष से देखते हैं तब ही हम उसका सत्य स्वरूप जान पाते हैं। इसी तरह शुद्ध निर्मल भावों से ध्यान करके ही हमारे मन की शांति स्वतः आएगी तथा इसी तरह हमें 'आत्म-बोध' की प्राप्ति होगी। इसे प्राप्त करने के लिए कोई विशेष प्रयासों की आवश्यकता नहीं है; बस भावों को निर्मल, चित्त को स्थिर, मन को शांत तथा पूर्ण ध्यान का रास्ता अपनाकर हम यह कर सकते हैं। इससे हम अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर पाएंगे तथा एक सुन्दर समाज की रचना में योगदान दे पाएंगे।



मुख्यालय कार्यालय द्वारा कार्यालय को बेहतर प्रदर्शन हेतु प्रदत्त पुरस्कार

कहना था कुछ

विशाल बड़जात्या
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कहना था कुछ, पर निःशब्द हूँ,
हतप्रभ हूँ, पराजित हूँ, खामोश हूँ, व्यथित हूँ ;
सोचता हूँ कि काश जीवन सरल हो पाता,
भीतरी शोर से बाहरी सन्नाटे को चीर पाता;
अपने मन की बातों को शब्दों में घोल तुम्हे पिला पाता,
पर फिर कहीं अपने अंतर्द्वन्द्व में जीने लगता हूँ
खुद से ही हार जाता हूँ, मन को विश्राम देता हूँ
और मौन को नियति मानने लगता हूँ ।

कहना था कुछ, पर एक उलझाव है,
असमंजस है, कशमकश है, उधेड़बुन है, विचारों का टकराव है;
सोचता हूँ कि निर्मल, निश्चल मन लिए जो भी है, जैसा भी है बोल दूँ,
मन की अनकही बातें कर, स्वप्नों के जीवन को खोल दूँ
पर फिर सहसा रूक जाता हूँ, स्तंभित होता हूँ, ठिठकने लगता हूँ;
सोचता हूँ जो भी समेटा है बिखर ना जाये, जो भी संजोया है खो ना जाये;
तुम्हारे बिना जीने से बेहतर है जी लूँ इन अकथित, अव्यक्त भावों के साथ,
इस असीम अनकहे सिलसिले के साथ;

पर फिर भी किसी दिन, किसी समय, किसी पल मुझे कहना था कुछ.....

दौर आत्मविश्वास का

स्वाति सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी(वा.)

यह अंतर्बुद्ध है , इसे तू लड़ता रह,
यह वो परिश्रम है, जो अज्ञात है,
जिसे जानता केवल भगवान है

एकद्वन्द, जो चल रहा है मन के भीतर,
एक संघर्ष, जिसे तू कर रहा है निरंतर ।
तेज़ है तूफ़ान, फिर भी तू डटा रह,
यह अंतर्बुद्ध है, इसे तू लड़ता रह ।

देखेंगे लोग हीनभाव से तुझे,
करेंगे उपहास, हसेंगे तुझपे,
वो न छोड़ेंगे कोई मौका तुझे नीचा दिखाने का,
गुज़रते वक्त की गति याद दिलाने का ।
क्योंकि अनजान हैं वो परिस्थितियों से तेरी,
उन्हें क्या पता तेरा संघर्ष, श्रम, तनाव,
असफलता की पीड़ा तेरी ।

किन्तु मित्र, अपनी कहानी का नायक तो तू ही है,
तो क्या हुआ अगर तू राह में थककर बैठ गया,
तो क्या हुआ अगर तू दौड़ की अंतिम रेखा को पार न कर सका,
अभी हिम्मत हार कर हथियार मत डाल,
अभी पराजय स्वीकार कर रणभूमि मत त्याग ।

याद रख, ये तूफ़ान भी एक दिन थमेगा,
उदासी भरी इसअंधेरी रात के बाद सूरज फिर उगेगा,
तो उठ, जहाँ छोड़ा था, कर वहीं से नई शुरुआत,

इन कठिनाईयों को पार कर ही तू दे सकेगा अंतर्बुद्ध को मात ।

तो बना ले धीरज को अपना कवच,
मेहनत को अपनी ढाल,
आगे बढ़ इस जीवनरूपी युद्धक्षेत्र में,
लेकर उम्मीद की मशाल।



गृह हिंदी पत्रिका "धरा गुर्जरी" का विमोचन

डॉ. संदीप कुमार बाजपेई
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कुछ माह पूर्व परिवार में एक समारोह के आयोजन को लेकर चर्चा हो रही थी। यह तय किया गया कि आगंतुकों को शाम 7 बजे आने का समय बताकर आमंत्रित किया जाए, ताकि लगभग 8 बजे तक लोग या जाएं और समारोह शुरू हो सके। इस वृत्तान्त में कुछ भी असाधारण नहीं है, हम सब इस प्रकार की बातें किसी भी आयोजन के समय करते हैं।

कार्यालय में कोई सेवानिवृत्ति का कार्यक्रम हो, या किसी डॉक्टर या अन्य हस्ती द्वारा कार्यालय सदस्यों को संबोधित किया जाना हो, कल्याण शाखा द्वारा सामान्यतः कम से कम पंद्रह मिनट पहले का समय बताया जाता है। तब कहीं जा कर समय पर लोगों की उपस्थिति सुनिश्चित हो पाती है। कई बार आगंतुक को कार्यक्रम से पूर्व चाय पिला कर और उनसे बातें करके कुछ समय निकाला जाता है ताकि इस बीच एक सम्मानजनक संख्या में श्रोता एकत्रित हो जाएं। यह सब इसलिए किया जाता है ताकि किसी आगंतुक के समक्ष कार्यालय की छवि खराब न हो। हालांकि जो लोग समय पर ऐसी जगहों पर समय उपस्थित हो जाते हैं, उन्हें अनावश्यक रूप से प्रतीक्षा करनी पड़ती है, और उनका समय व्यर्थ होता है।

यह सब अब हम सबकी सामान्य आदतों में शुमार हो चुका है और आमतौर पर हम सबके ध्यान में यह बातें नहीं आती हैं। इस बात पर कुछ सप्ताह पूर्व सहसा ध्यान गया जब एक समाचार पढ़ा। समाचार यह था कि टेनिस के निवृत्त दिग्गज खिलाड़ी ब्योर्न बोर्ग मंगलवार को बेंगलुरु में एक सम्मान समारोह छोड़ कर चले गए। ग्यारह बार के ग्रैंड स्लैम विजेता बोर्ग को कर्नाटक स्टेट लॉन टेनिस एसोसिएशन ने सम्मानित करने के लिए बुलाया गया था, परंतु उनका सम्मान करने आने वाले कर्नाटक के मुख्यमंत्री दो घंटे देरी से पहुंचे। इस कारण श्री बोर्ग थोड़ी देर प्रतीक्षा कर के उस स्थान से चले गए। उनके जाने के बाद सम्मान समारोह स्थगित हो गया। कार्यक्रम के आयोजकों ने कहा कि मुख्यमंत्री को अपनी कुछ अन्य कमिटमेंट्स के कारण देरी हो गई।

एक मुख्यमंत्री को पूरे राज्य का शासकीय कार्य संभालना पड़ता है, किसी अपरिहार्य कारण से देर हो सकती है। परंतु फिर भी श्री बोरग की समय की पाबंदी की प्रशंसा करनी होगी।

भारत में देर से आना एक प्रथा के रूप में माना जाता है। आपने कई फ़िल्मी सितारों के बारे में पढ़ा होगा कि वे आदतन सेट पर देरी से आकर साथी कलाकारों को घंटों प्रतीक्षा करवाते थे। वहीं दूसरी ओर कुछ अन्य कलाकार अपनी समयबद्धता के लिए प्रसिद्ध होते हैं। कई बार दूसरों को प्रतीक्षा करवा कर लोग अपने को ज़्यादा बड़ा कलाकार या व्यक्ति सिद्ध करने की मानसिकता के तहत भी देर से पहुंचते हैं।

पर एक सामान्य धारणा है कि भारतीय समयबद्धता के लिए बहुत गंभीर नहीं माने जाते। हम अक्सर ही 10-15 मिनट देर से पहुँचने को समय पर पहुंचना ही मानते हैं।

अक्सर हम कहीं देर से पहुँचने के लिए शहरों में बढ़ते ट्रैफिक को दोषी ठहराते हैं। शहरों का ट्रैफिक अवश्य अधिक है और कई बार हमारे देर से पहुँचने का कारण भी है, परंतु मूल कारण है, हमारा ग़लत अनुमान। अक्सर हम कहीं पहुँचने के समय का ग़लत अनुमान लगाते हैं, फिर रास्ते में हड़बड़ी में वाहन चलाते हैं, ट्रैफिक नियमों का ठीक से पालन नहीं करते, लाल बत्ती तोड़ कर निकल जाते हैं, इसलिए कि हमको जल्दी पहुंचना है। कई बार कोई अति आवश्यक कार्य हो भी सकता है, पर ऐसा कभी-कभार ही हो सकता है। समय पर गंतव्य हेतु निकल कर हम इत्मीनान से पहुँच सकते हैं। मैंने स्वयं महसूस किया है कि पर्याप्त समय ले कर निकलने पर कोई हड़बड़ी नहीं रहती, दूसरों को रास्ता देने का समय रहता है, सिग्नल की पीली या लाल बत्ती पर भी निकल जाने की आपाधापी नहीं रहती।

भारत में लोगों के समय पर न आने का सीधा असर हमारे व्यवसायों, शिक्षा प्रणाली, और सामाजिक संबंधों पर होता है। जब लोग समय पर नहीं आते हैं, तो इससे समय पर आ जाने वालों का समय ख़राब होता है, जो कि समय पर न आने वालों के समय के बराबर ही महत्वपूर्ण होता है।

राष्ट्राध्यक्षों के स्तर पर थोड़ी सी भी देरी को अतिथि का अपमान माना जाता है। जुलाई 2022 में रूस के राष्ट्रपति श्री पुतिन को तुर्किए के राष्ट्रपति एरदोआन ने लगभग एक मिनट प्रतीक्षा करवाई तो इसे श्री पुतिन का अपमान माना गया। हालांकि श्री पुतिन ने 2020 में श्री एरदोआन को प्रतीक्षा करवाई थी।

स्विट्ज़रलैंड, जापान, डेनमार्क सहित कई देशों के लोग अपनी समयबद्धता के लिए प्रसिद्ध हैं। आवश्यकता है हम एक राष्ट्र के रूप में अपनी लेट-लतीफी से मुक्ति पाएँ और एक समयबद्ध देश के रूप में दुनिया में पहचान बनाएं। व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास करके हम इस स्थिति को बदल सकते हैं, इस के लिए सरकार की किसी पहल की भी आवश्यकता नहीं।

कुछ छोटे-छोटे कदम, जो मुझे समयबद्ध होने की दिशा में आवश्यक लगते हैं, इस प्रकार हैं:

- कोई औपचारिक बैठक हो या अनौपचारिक मुलाकात, या फिर सहकर्मियों, मित्रों के साथ कहीं चाय-नाश्ते इत्यादि के लिए ही क्यों न जाना हो, नियत समय पर या उस से पूर्व पहुंचना सुनिश्चित करें।
- समय का सही अनुमान लगाने का प्रयास करें। ऐसा करते समय तमाम कारक जो समयबद्धता को प्रभावित कर सकते हैं, उसका ध्यान रखें।
- यदि समय का सही अनुमान लगाना संभव न हो पा रहा हो तो कुछ अधिक समय जोड़ कर बताएं।
- यदि लगे कि कहीं पहुँचने में देरी हो रही है, तो जो प्रतीक्षा कर रहा है, उसे सूचित करें।
- देर से पहुँचने पर क्षमा मांगना न भूलें। इस से अगली बार समयबद्ध होने में सहायता मिलती है।

अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में छोटे-छोटे अवसरों पर समय का पालन करते-करते शीघ्र ही हमें समयबद्धता की आदत अवश्य पड़ जाएगी।

ज़िंदगी का सफ़र

सुनीता शॉ
लेखापरीक्षक

ज़िंदगी का सफ़र ।
है नहीं ये खबर
जीवन की कैसी है ये डगर
चाहे जैसी भी हो घड़ी
चलते रहना ही है सही।

चलना है किस ओर मगर
न है इसकी कोई खोज-खबर
जीने की कुछ आशा में
भटकते रहते हैं हम डगर-डगर।

नयी राहों की खोज में
उम्मीदों के इस जोश में
ढूँढते हैं हम हौसलों की लहर
फिर भी है ये ज़िंदगी का सफ़र।

रहती है कुछ नाउम्मीदी सी
अधूरी-सी और पूरी भी
सपनों की ये डोर पकड़
ज़िंदगी करती है ये सफ़र
फिर आता है एक मोड़ नज़र।

जब टूटते हैं सपने और रूठते हैं अपने
जब छूटता है साथ और बिखरते हैं हम
चलना उस पल अमृत है या ज़हर
सोचती हूँ बस यही चारों प्रहर
प्रश्न क्यों है ये ज़िंदगी का सफ़र।

उलझनों की डोर में
जीवन के इस शोर में
खो जाते हैं कई लोग मगर
शायद ! तब भी है ये ज़िंदगी, एक सफ़र।

बस परिवर्तन ही है शाश्वत,
दिन-रात बदलते हैं,
पानी से बादल बनते हैं,
बादल फिर बारिश करते हैं,
वर्षा में भरते हैं तालाब,
गर्मी में वाष्प बन उड़ते हैं।

मौसम भी परिवर्तन के बस,
सर्दी जाती गर्मी आती,
गर्मी भी कितना रह पाती,
बन बारिश वह भी बह जाती,
बारिश से फिर सर्दी आती।

इसके अधीन सब प्राणी भी,
खेल-खेल में जाता बचपन,
युवाकाल भी है बस कुछ क्षण,
जरा अवस्था भी कुछ दिन की,
हर दिन ही परिवर्तन जीवन की।

जिंदगी के सफर में, एक कोलाहल है मेरे अंदर।

मंजिल है सामने और रास्ते में सवालों का समुंदर।

पूछा मैंने, क्या मिलेगा उस मंजिल को पा के, क्या कोलाहल मेरा कम होगा?

जिंदगी ने कहा, जा, पा ले अपनी मंजिल को, फिर देख तेरा क्या नया रंग होगा।

“तू कर्म निष्ठा का धनवान होगा, या केवल अहंकार कमाएगा,

देख ले अपनी दुनिया में, ये मैं नहीं, तुझे वक्त बताएगा।”

मैंने पूछा, मंजिल कि इच्छा रखना, क्या मेरा स्वार्थ है?

सब कहते हैं मंजिल मिले तो अर्थ यही, वरना सब व्यर्थ है।

जिंदगी ने कहा –

जिंदगी का अर्थ क्या है, वो आज तुझे बताती हूँ,

जो तू नहीं जानता, वो मैं तुझे समझती हूँ।

मंजिल तो तुझे मिल ही जाएगी, पर आनंद तो सफर में है,

इस घड़ी को जी ले, ये फिर नया आएगी, क्यों तुझे लगता है कि तू समर (युद्ध) में है।

जिंदगी में मंजिल को पाने में, माना की मसले हजार हैं।

गर जिंदगी को तू संघर्ष न समझ, “संग हर्ष” समझे, तो जिंदगी गुलज़ार है।

काश! मेरे बच्चे भी ऐसे होते

विजय एन. कोठारी
महालेखाकार

आज मैं ऑफिस से घर पहुँचा तो मेरा उदास चेहरा देखकर श्रीमती जी ने पूछा “क्या हुआ ? आज आप उदास क्यों लग रहे हैं”? मैंने कहा कि आज ऑफिस में अपने दोस्तों के साथ खाना खा रहा था तभी हमारे ऑफिस के श्रीवास्तव जी मिठाई का डिब्बा लेकर आए। मैंने पूछा “श्रीवास्तव जी किस खुशी में मिठाई खिला रहे हैं”? श्रीवास्तव जी बोले “मेरे बेटे ने सिविल सर्विसेज़ परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है। अब वह अफ़सर बन गया है”।

यह सुनकर एक पल के लिए मैं खुश हुआ। फिर मुझे अपने बेटे कमल का ख्याल आया। उसने भी सिविल सर्विसेज़ परीक्षा दी थी लेकिन पास नहीं हो पाया। दो साल से एक इंजीनियरिंग कंपनी में नौकरी कर रहा है और बार-बार कहता है कि उसे अपना बिज़नेस खोलना है। कहाँ मेरा बेटा और कहाँ श्रीवास्तव जी का! काश ! मेरा बेटा भी श्रीवास्तव जी के बेटे जैसा होता!

यह सुनते ही श्रीमती जी रुआँसी हो गईं। वो बोलीं कि मेरे साथ भी आज ऐसा ही हुआ। सातवें फ्लोर वाली नंदिनी भाभी लिफ़्ट में मिली थीं, बहुत खुश थीं। उनके हाथ में एक बॉक्स था। मैंने पूछा “क्या बात है नंदिनी जी, आप बहुत खुश दिख रही हैं? इस बॉक्स में क्या है”? वो बोलीं, “इसमें स्वर्ण पदक है। मेरी बेटी ने टेनिस में राष्ट्रीय स्तर का खिताब जीता है”। यह बताते समय उनकी आँखों की चमक चौगुनी हो गई थी। यह सुनकर मैं भी खुश हुई और उन्हें बधाई दी। घर आई तो अपनी खुशी ने दरवाज़ा खोला। उसे देख कर याद आया कि खुशी ने बैडमिंटन में आगे बढ़ने की कोशिश की थी लेकिन राज्य स्तर का भी कोई पदक नहीं जीत पाई थी। अब छोटे बच्चों को बैडमिंटन सिखाती है। काश ! हमारी बेटी भी नंदिनी की बेटी जैसी होती।

इस तरह की बातें करने के बाद मैं और श्रीमती जी सोने जा रहे थे, तभी बच्चों के कमरे से कुछ आवाज़ें आ रही थीं। हम थोड़ा ठहरे। ध्यान लगा कर सुना तो कमल बोल रहा था “ खुशी, मेरे साथ कॉलेज में नयन श्रीवास्तव था न, उसने सिविल सर्विसेज़ परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है। वो बता रहा था कि उसके माता-पिता ने बचपन से उसे पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया, उसे अच्छा ट्यूशन मिले, इसके लिए उसके पिता रोज़

एक घंटा साइकिल चलाकर क्लास छोड़ने-लेने जाते थे, उसकी मम्मी रात-रात भर जागती थीं ताकि वो अच्छे से पढ़ाई कर सके। दो बार असफल होने पर भी उसके माता-पिता उसे प्रोत्साहित करते रहे और वो तीसरी बार में सफल हो गया। यह कहते हुए कमल की आँखों में जैसे किसी टूटे हुए सपने के टुकड़े उभर कर आ गए।

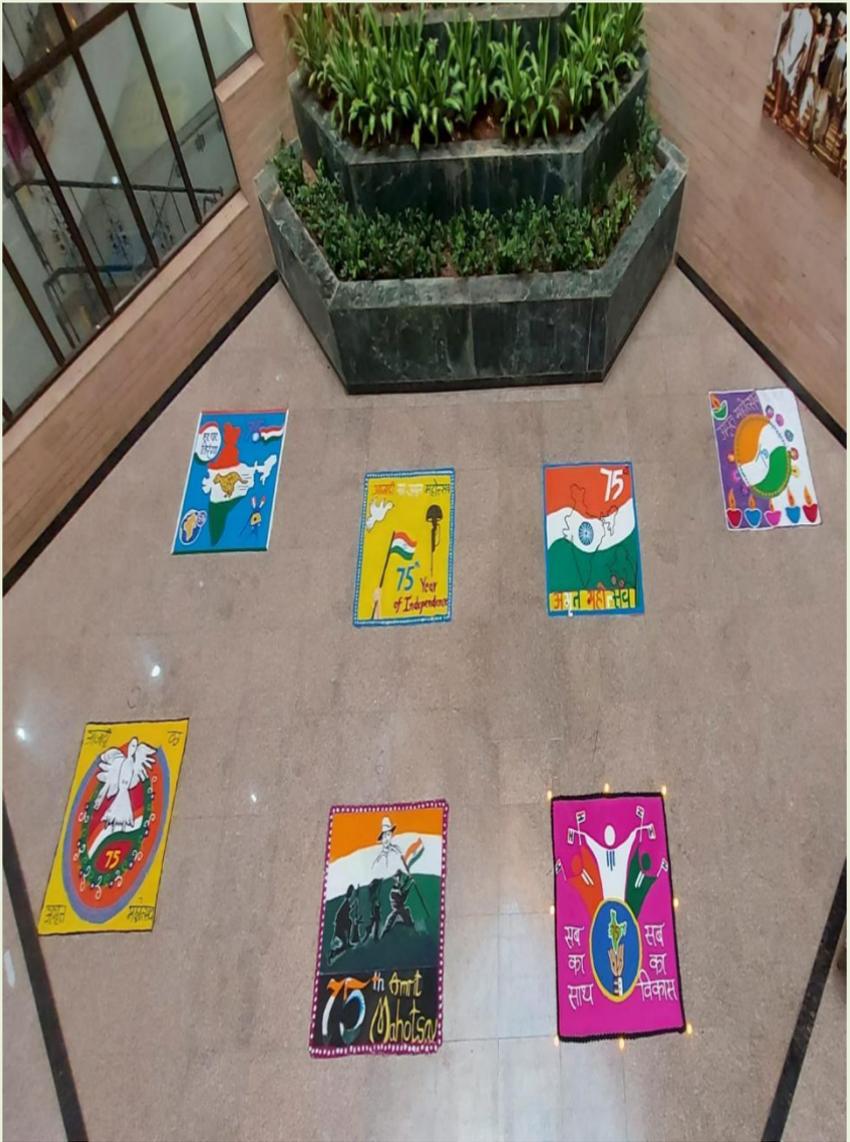
तभी खुशी बोली “भैया मैंने भी समाचार-पत्र में पढ़ा कि नंदिनी चाची की बेटी ने टेनिस में स्वर्ण पदक जीता है। मैंने भी बैडमिंटन में सफलता हासिल करने की बहुत कोशिश की थी। पता है, नंदिनी चाची ने उनकी बेटी पाँच साल की थी, तभी पहचान लिया था कि उनकी बेटी को टेनिस खेलना अच्छा लगता है। वे उसके लिए टेनिस का खूब सारा समान लातीं। शहर में जो भी टेनिस टूर्नामेंट होता तो उसे वहाँ लेकर जातीं। बड़ी मिन्नतें करके नंदिनी चाची ने अपनी बेटी को शहर की सबसे श्रेष्ठ ऐकेडमी में दाखिला दिलाया। उसके स्कूल में कितने मार्क्स आते हैं, उसकी कभी परवाह नहीं की। आज उनकी बेटी ने नंदिनी चाची का सपना पूरा कर दिया।”

यह सुनकर मेरे और श्रीमती जी के पैरों तले से ज़मीन खिसक गई। हमने एक-दूसरे की ओर देखा। मुझे याद आया कि किस तरह मैंने कमल को ज़बरदस्ती सिविल सर्विसेज़ परीक्षा दिलवाई थी। परीक्षा की तैयारी के लिए उसे दिल्ली जाना था तो मैंने यह कहकर मना कर दिया था कि वहाँ खर्च ज़्यादा होगा। वो जब भी कम मार्क्स लाता तो मैं उसे खूब डांटता था। श्रीमती जी की भी आँखों में अतीत उतर आया कि उन्होंने खुशी को हमेशा यह कहकर हतोत्साहित किया कि स्पोर्ट्स खेलने वाली लड़की की शादी आसानी से नहीं होती। उसे कोचिंग लेनी थी तो कह दिया कि मुझे घर के काम से फ़ुर्सत नहीं है जबकि श्रीमती जी रोज़ दो घंटे अपनी सहेलियों से कॉलोनी में या मोबाईल पर बातें करती थीं।

हमें यह अहसास हुआ कि हमने अपने बच्चों को वो प्रोत्साहन, समय और पैसा नहीं दिया जो श्रीवास्तव जी ने और नंदिनी जी ने दिया। कमी हमारे बच्चों में नहीं थी, बल्कि हमारी कोशिशों में थी। कितना आसान था हमारे लिए सारी ज़िम्मेदारी बच्चों पर डालकर स्वयं की कमियों पर पर्दा डालना और यह सोचना कि काश! हमारे बच्चे भी ऐसे होते। हमारे मन में यह विचार कभी नहीं आया, “काश! हम भी ऐसे माता-पिता होते”।



ओणम के उपलक्ष में मध्याह्न भोजन



रंगोली प्रतियोगिता की एक झलक



टेराकोटा

साबरकांठा जिले के पोशिना शहर में गुजरात में टेराकोटा के काम का बेहतरीन प्रदर्शन देखा जा सकता है। पोशिना में एक आदिवासी मंदिर में टेराकोटा से बने हज़ारों घोड़े कतारों में रखे रहते हैं। ये घोड़े स्थानीय देवी को प्रसाद के रूप में चढ़ाए जाते हैं। आसपास के गांवों में इसी तरह के नक्काशीदार घोड़े बनाए जाते हैं।

स्थानीय लोग घोड़े की इन आकृतियों को अपने देवता को अर्पित करते हैं और अच्छे स्वास्थ्य, समृद्धि और भाग्य के लिए प्रार्थना करते हैं। गांवों के जनजातीय लोग अपनी रचनाओं पर गर्व करते हैं।

गुजरात के एक छोटे से गांव से, यह शिल्प दूर-दूर तक फैल गया है।



मोढेरा नृत्य उत्सव

मोढेरा नृत्य महोत्सव जिसे उत्तरार्ध महोत्सव या मोढेरा उत्सव के रूप में भी जाना जाता है, गुजरात में कला, संगीत, नृत्य और संस्कृति के प्रसिद्ध समारोहों में से एक है। इस महोत्सव में क्षेत्र के पारंपरिक नृत्य रूपों का प्रदर्शन होता है एवं नृत्य या नृत्य के रूप में व्यक्त अन्य क्षेत्रों के सांस्कृतिक लोकाचार को एक साथ लाने के लिए यह एक मंच के रूप में कार्य करता है। मोढेरा का सूर्य मंदिर नर्तकियों की जीवंत अभिव्यक्ति के लिए एक भव्य पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करता है।

देश के सभी क्षेत्रों से नृत्य मंडलियां और कलाकार विभिन्न नृत्य रूपों और शैलियों का एक संगम बनाते हैं। कलाकार मंदिर की इमारत पर बनी बलुआ पत्थर की मूर्तियों में जान डालते हैं, गाते हैं और बीते समय की किंवदंतियों को सुनाते हैं। तीन दिवसीय मोढेरा उत्सव भारतीय नृत्य और संगीत की जीवंत विरासत का अनुभव करने का एक आदर्श मंच है।